सार-संसार

अप्रैल-जून 2017

वर्ष : 22 पूर्णांक : 86 अप्रैल-जून 2017 अंक : 2

मुख्य सम्पादक
अमृत मेहता

हमारी वेबसाइट
www. saarsansaar.com
Email : saarsansaar@gmail.com

मूल्य :
एक प्रति : 20 रुपये
वार्षिक : 80 रुपये

Subscription
Single Copy : Rs. 20.00
Annual : Rs: 80.00

प्रकाशक : **अमृत मेहता**
जे-3/सी, लाजपत नगर-II
नई दिल्ली-110024
मुख्य सम्पादक : अमृत मेहता
प्रकाशन अवधि : त्रैमासिक
शब्द संयोजन : देवेन्द्र कुमार शर्मा
मुद्रक : हर्ष प्रोसस एंड प्रिंटर्स
मूल्य : 20 रुपये : (एक प्रति)
: 80 रुपये (वार्षिक)
मुख पृष्ठ : Karl IV

Published by
Amrit Mehta
at
JA3/C, Lajpat Nagar III
New Delhi–110024

सम्पादक मंडल

प्रो वननुर रहमान
अरबी एवं अफ्रीकी अध्ययन केन्द्र
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली-110067

देवेन्द्र सिंह रावत
जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली-110067

डागमार मारकोवा
चार्ल्स यूनिवर्सिटी, प्राग

बाबली मोइत्र सराफ
इन्द्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली-110006

चेक साहित्य विशेषांक

चेक सम्राट

सार संसार

मुख्य सम्पादक

अमृत मेहता

अतिथि सम्पादक एवं अनुवादक

प्रो. डागमार मारकोवा

पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका अथवा अंकों पर अपनी प्रतिक्रियाएँ इन पतों पर भेजें :

देवेन्द्र कुमार शर्मा, डी-580, गली नं। 4, अशोक नगर, शाहदरा, दिल्ली-110093

या

saarsansaar@gmail.com

सम्पादक की कलम से...

इस वर्ष का दूसरा अंक फिर एक बार चेक साहित्य विशेषांक है। यह अंक हमारी चेक भाषा से हिन्दी की अनुवादिका प्रोफेसर डागमार मार्कोवा को समर्पित है। अंक में उन्होंने कुछ पाठों में चेक इतिहास को गल्प बनाकर पेश किया है। देश के कुछ सम्राटों को, अपने अन्दाज में, एक रुचिकर ढंग तथा शैली में प्रस्तुत किया है। आम आदमी के स्तर पर सम्राटों को रखकर उनकी मानसिकता के भीतर एक मौलिक ढंग से झाँका है। उनका मज ाक भी उड़ाया है। हिन्दी में अपने एक निराले अन्दाज में, बल्कि एक भारतीय, वैश्विक तथा समसामयिक परिप्रेक्ष्य में भी। इस अंक में हमारा अनुवादक डागमार से उनके लेखकीय अवतार में साक्षात्कार होगा, जिस भूमिका में वह पूरी खरी उतरी हैं। फिर उनके द्वारा चेक भाषा से अनूदित साहित्य भी है। इनमें से अर्नोस्त लुस्टिग की लम्बी कहानी 'रात और कहानी' को मैं द्वितीय विश्व-युद्ध में नाजि यों द्वारा यहूदियों पर किए गए अत्याचारों पर लिखी गई कहानियों में एक उत्कृष्ट कहानी होने का दर्जा देता हूँ। इस मार्मिक कथा में लुडविग ने, जो स्वयं नाजी यातना-शिविरों में अत्याचारों के शिकार रह चुके थे, उन मनुष्यों की, विशेषकर छोटे बच्चों की, मनोदशा का ऐसी लाक्षणिक एवं दार्शनिक शैली में वर्णन किया है, जिसका कोई सानी नहीं। एक ओर पाठ पावेल कोहोऊत की पुस्तक 'एक क्रान्तिकारी की डायरी' का एक अंश है। पहले भी मैं एक बार लिख चुका हूँ कि प्रोफसर मार्कोवा अकेली ऐसी विदेशी अनुवादिका हैं, जो न केवल अपनी मातृभाषा में अनुवाद करती हैं, बल्कि अपनी मातृभाषा से हिन्दी में भी अनुवाद करती हैं। यह सब वह एक पेशेवर अनुवादक की हैसियत से नहीं करतीं, अपितु निस्वार्थ भाव से इसे एक तपस्या मान कर अनुराग से करती हैं। जिस तरह से यह हिन्दी की सेवा कर रही हैं, शायद ही किसी विदेशी विद्वान ने की होगी। मैंने जब इन्हें अपने स्वयं के बारे में दो शब्द लिख कर भेजने को कहा तो इनकी प्रतिक्रिया अत्यन्त विनम्र एवं विनयशील थी। पाठकगण स्वयं ही इसे पढ़ लें :

अपने बारे में क्या लिखूँ

सच्ची बात यह है कि मेरा हिन्दी से सम्पर्क संयोग से हुआ।

एक चेक कस्बे में पली हूँ, जो युद्ध के जमाने में हिटलर के कब्ज ा में आ गया

था। माता-पिता अध्यापक थे। मैंने कब ं में प्राथमिक और सेकंडरी स्कूल में पढ़ाई की थी। उच्चतम माध्यमिक स्कूल में, जि ला शहर में, जहाँ मैं पढ़ती थी, वहाँ रोज बस से जाती थी। मुझे हमेशा से विदेशी भाषाओं का शौक था। युद्ध के जमाने में बचपन में जर्मन सीखी थी, बहुत साल बाद दुबारा अच्छी जर्मन सीख गई, लेकिन यह एक दूसरा किस्सा है।। माध्यमिक स्कूल में लैटिन, रूसी और फ्रेंच पढ़ाई जाती थी। (अफसोस की बात है कि मेरी लैटिन तब से 99 प्रतिशत तथा फ्रेंच 90 प्रतिशत तक विस्मृत हो गई।) अँग्रेजी का ट्यूशन लेती थी।

मेरी अँग्रेज अध्यापिका मुझे ऐसे ही पढ़ने के लिए अकसर कुछ अँग्रेज ी पुस्तकें दिया करती थीं। संयोगवश ऐसा हुआ कि पढ़ने के आखिरी साल में, मैट्रिक से पहले उसने मुझे भारत के बारे में एक पुस्तक पढ़ने के लिए दी। मेरा मन रम गया। बस में पढ़ती थी, फुटपाथ पर चलते चलते हाथ में लिए पढ़ती थी। पुस्तक वापस करने का मन नहीं था। शीर्षक यहाँ बताना उचित नहीं समझती हूँ। वैसे मेरे पिता के पास भी कुछ अनुवाद थे (ठाकुर, रामायण), ये भी पढ़े थे।

उन दिनों तय करना था कि आगे क्या पढ़ना है। रिश्ते के एक अंकल के द्वारा पता चला कि प्राग की चार्ल्स यूनिवर्सिटी में हिन्दी-संस्कृत पढ़ने की सम्भावना है। तब तक यह मालूम भी नहीं था। अब दाखिला होने का सवाल था। मेरी हिन्दी सीखने की तीव्र इच्छा थी, लेकिन प्राग में पढ़ाई समाप्त करने के बाद रहने और काम करने की भी उतनी ही इच्छा थी। प्राग से प्रेम पहले से था। वैसे फ ारसी, तुर्की, भाषा इंडोनीशिया पढ़ने का मौका आसानी से मिल सकता था। प्राग की खातिर हिन्दी के बजाय यह भी मानने को तैयार थी। लेकिन खुशकिस्मती रही। हिन्दी में प्रवेश मिल गया।।

यह इच्छा पूरी हुई। दूसरी इच्छा पूरी होने में, प्राग में रहने की इच्छा पूरी होने में, कुछ समय लगा लेकिन यह भी अलग बात है।

हमारे हिन्दी के प्रोफेसर बहुत अच्छे आदमी थे। चेक थे, उन्होंने हिन्दी बड़े यत्न से सीखी थी और दिल लगाकर पढ़ाते थे। आरम्भ अच्छा रहा। साथ ही उर्दू भी पढ़ी। प्रोफेसर से बहुत कुछ सीखा। उनका आदर करती थी, लेकिन उनकी पक्की राय थी कि मुझे आगे भी हिन्दी व्याकरण का अध्ययन और अनुसन्धान करना चाहिए। मेरा मन व्याकरण में नहीं लगा। भाषा सीखने के लिए व्याकरण जानना बहुत ज रूरी है, लेकिन आगे इसका क्या करूँगी? मेरे लिए कोई भी भाषा लोगों से सम्पर्क स्थापित करने का माध्यम है, एक देश के लोगों को दूसरे देश की संस्कृति से परिचित करवाने का। लेकिन व्याकरण स्वयं ही साध्य होना मुझे अच्छा नहीं लगा। हाँ, व्याकरण पर काम करने के लिए मूल पढ़ना बहुत ज रूरी है। जो हिन्दी की साहित्यिक कृतियाँ व्याकरण की खातिर सब सबसे पहले पढ़ी थीं, वे थीं उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानी

'पिंजरा', जैनेन्द्रकुमार की 'अपना अपना भाग्य' और यशपाल की एक कहानी, जिसका शीर्शक मुझे याद नहीं रहा। तीनों कहानियों में भारतीय जीवन के सच्चे चित्रण मिले। इससे बड़ी प्रेरणा मिली। मन ही मन तय कर लिया कि अगर कोई और चारा नहीं तो व्याकरण पर अपनी छोटी थीसिस किसी न किसी तरह से लिखकर दूँ, लेकिन बाद में साहित्य। आधुनिक साहित्य।

फिर परिस्थितियाँ बदल गईं। ऐसा हुआ कि छोटी थीसिस प्रेमचन्द की कहानियों के बारे में लिखी थी और फिर कुछ साल बाद बड़ी थीसिस 'सन् 1947 के बाद के हिन्दी उपन्यास में नारी समस्याएँ' पर।

1969 से प्राग में रहती हूँ। नौकरी में भारत और हिन्दी से कभी बिछुड़ी नहीं, हालाँकि तरह तरह का दूसरा काम भी करना पड़ता था। जर्मन में मेरी अनूदित और प्रकाशित पहली कहानी राजेन्द्र यादव की 'बिरादरी-बाहर' थी, चेक में कमलेश्वर की 'दूसरे' थी। हिन्दी से चेक में चार उपन्यास अनूदित किए, कहानियों की संख्या मुझे याद नहीं रही।

शुरू ही से चेक से हिन्दी में अनुवाद करने की भी सोचती थी। हाँ, यह बचपना था, तब इतनी हिन्दी आती भी नहीं थी। सिफ ़ यही नहीं, जो मुझे चेक में अच्छा लगा (दिल हमेशा से चेक भाषा और साहित्य से भी लगा हुआ था), उसका अनुवाद करने का मन होता था। लेकिन ऐसे बिना सोचे समझे हिन्दी से या हिन्दी में अनुवाद करने से काम नहीं चलता। सामाजिक परिस्थितियाँ और मानसिकता तो अलग अलग हैं, दूर की संस्कृति है। फिर अनुवाद करने का मकसद दूर देश के लोगों को केवल साहित्य से परिचित करवाना ही नहीं है बल्कि देश के वर्तमान, अतीत और परिस्थितियों से परिचित करवाना भी है। इसमें खूब सोच-समझकर अनुवाद करने से बहुत मदद मिल सकती है। इसमें 'सार-संसार', जो तरह-तरह के साहित्यों से अनुवाद प्रकाशित करता है, बढ़िया अद्वितीय काम करता है। आभारी हूँ कि यह मौका मिल गया।

प्रो. डागमार मारकोवा

चिट्ठी आई है

आशा है सपरिवार सानन्द सकुशल ही होंगे। इधर सब कृपा है परमात्मा की। आज की डाक से मुझे 'सार संसार' का अक्टूबर-दिसम्बर, 2016 अंक मिला। धन्यवाद। अंक मैं पूरा पढ़ गया। विदेशी कलमकारों को आप जिस तरह गम्भीरता से पाठकों के सामने रख रहे हैं वह सराहनीय और प्रेरणापूर्ण है। कई तथ्य सामने आते हैं। प्रश्न तुलना का नहीं, अपितु 'सत्यम शिवम् सुन्दरम' का है। सामयिकता और पारिवारिकता पश्चिम में कैसी है और हमारी 'गृहस्थी' को हम कैसे ले रहे हैं, इस पर एक अध्ययन की ज रूरत अवश्य है। 'ग्युन्टर ग्रास' का जीवन और उसके वैचारिक मोड़ बहुत चीजें सामने लाते हैं। आपका आभार मानना ज रूरी है कि आप इतना परिश्रम करके हमें ऐसी सामग्री दे रहे हैं। पुनः धन्यवाद। सभी को मेरा सादर प्रणाम कहें। योग्य सेवा से सूचित करें।

बालकवि बैरागी, मनासा, जिला नीमच

अक्टूबर-दिसम्बर, 2016 का अंक भी अपनी तरह का भरा-पूरा अंक है। 'बीतते समय के विरुद्ध लेखन' गुंटर ग्रास की जीवनी मे यह पढ़ना मज ेदार लगा कि 'डांस के शौकीन ग्रास हर बार नाच-नाच कर एक जोड़ा जूतों को फाड़ डालते थे।'

'प्रस्तर वृष्टि' मे गहराई तक उतरकर लेखक के प्रभावशाली विवरण ध्यान खींचते हैं।

जर्मन लोककथा 'खरगोश और काँटाचूहा' तो मेरे 8 वर्षीय बेटे को भी बहुत पसन्द आई ।

कमलजीत सिंह, जमशेदपुर

आपकी पत्रिका अतुलनीय है। आपने हिन्दी भाषा को योगदान देने में एक महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। देखना है कि आने वाले दिनों में यह युवाओं को कितना प्रेरित करता है। ऐसा होता है कि जब हम में से एक अपना दायित्व भूल जाता है तो कार्य को कभी पूरी न होने वाली क्षति पहुँचती है। साहित्य सृजन से कितने जीवनों का

निर्माण होता है, यह देखना है।

शीला बोदरा, हजारीबाग

इतना लम्बा सफर फलदायक होता लग रहा है।

सुनीता यादव, ईमेल से

हमारे यहाँ हमने खबरों में देखा है कि तुम्हारे यहाँ 'होली' नाम का एक बहुत बड़ा त्यौहार मनाया जाता है। यह तो मैं नहीं जानता कि क्या तुम लोग भी उसमें मस्ती करते हो, लेकिन मुझे तब याद आया कि बहुत समय मैं तुम्हें पुनः हेलो करना और अपनी पत्रिका मेल से भेजने के लिए तुम्हारा धन्यवाद करना चाहता था। बड़ी कमाल की बात है संस्कृतियों के मध्य एक माध्यम के तौर पर, सीमाओं के आरपार एक संवाद को सम्भव बनाने में तुम एक विश्व-नागरिक के रूप में इतने सक्रिय हो। क्योंकि हमारे इस समय में यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे जैसे लोग हों, जो मनुष्यों में स्नेह बनाने के लिए प्रयत्नशील हों, और दूसरों को सचमुच समझना चाहें। खेद का विषय यह है कि इन दिनों जीत वो रहे हैं, जो कट्टरपन्थी हैं, मनुष्यों के मध्य सेतुओं का विनाश कर रहे हैं, पागल मनुष्यों और धर्मान्धों की तो बात ही क्या करें!

अन्द्रेआस रुमलर, लेखक, कोलोन

यह अंक प्रो. डागमार मारकोवा को समर्पित

अनुक्रम

सम्पादक की कलम से...	5
चिट्ठी आई है	*8*
चेक महाराणा वात्स्लाव : बाद में पवित्र	12
चेक राजा तथा सम्राट कारल चतुर्थ घर में	15
स्डोल्फ द्वितीय, हाब्सबुर्ग सनकी या दार्शनिक चेक राजा	23
रात और कोहरा	28
5.5.1945, प्राग	59

चेक महाराणा वात्स्लाव : बाद में पवित्र

पवित्र वात्स्लाव (907-935) चेक महाराणा व्रतिस्लाव और इसकी पत्नी ड्राहोमीरा का बेटा था। ड्राहोमीरा स्लावों की ज रा उत्तरी शाखा की थी, जिनको बाद में जर्मन सैक्सनों ने खत्म कर दिया। वात्स्लाव के बारे में बहुत से पौराणिक आख्यान सुनाए जाते थे, जिनमें कुछ सच हैं, कुछ कल्पित हैं।

इन आख्यानों के अनुसार वात्स्लाव अपने समय के लिहाज से बहुत पढ़े-लिखे थे। स्लाव पादरी और उनकी दादी लुडमिला उसे पुरानी स्लावोनिक भाषा, लैटिन और शायद ग्रीक भी बचपन से पढ़ाते थे। बाद के जमाने का चित्र लोक प्रिय है, जिस में बच्चा वात्स्लाव अपनी दादी की ओर बड़े आदर से घुटने टेके देख रहा है और दादी माँ कुछ समझा रही हैं। शायद बोल रही थी : "वाशो (वात्स्लाव का घरेलू नाम), पढ़ना-लिखना बहुत ज रूरी है। अपने चारों ओर देख लो, जो लोग अनपढ़ हैं, वे कभी कामयाब नहीं हो सकते।" क्या यह किस्सा सच्ची है, क्या सच्ची नहीं? कौन जाने। बहू ड्राहोमीरा का स्वभाव भिन्न था। उसे और उसके साथियों को लगता था कि जो शिक्षा सास पोते को देती है, वह मठवासी या पादरी के लिए उचित है, भावी शासक के लिए नहीं। आखिर ईसाई धर्म ने चेक देश में अभी पूरी तरह से जड़ें नहीं पकड़ी थीं । पादरी तो चाहिए थे लेकिन कुछ सख़्ती भी चाहिए थी, फिर ड्राहोमीरा को अपनी जन्मभूमि का अनुभव था, जहाँ जरमन सैक्सनों का लगातार खतरा रहता था।

दोनों महिलाओं के नाम संयोगवश प्रतीकात्मक लगते हैं। लुडमिला माने लोगों को प्रिय यानी लोकप्रिया या लोगप्रेमी। दोनों नाम उसके स्वभाव के बार में कुछ बताते हैं। ड्राहोमीरा नाम इतना लुभावना नहीं इसके अवयव ड्राहो माने प्रिय लेकिन महँगा भी हो सकता है। मीरा माने शान्ति लेकिन माप, नाप भी हो सकता है। दोनों नाम अब भी चलते हैं। 'लुडमिला' अधिक लोकप्रिय है।

अब अपनी कल्पनाशक्ति जरा पनपने दें। वात्स्लाव अपनी दादी माँ के घुटनों के पास घुटने टेके बैठा है, अचानक दरवाज ा खुलता है (या परदा अचानक एक ओर हटता है क्या जाने उनके गढ़ में दरवाज े कैसे होते थे), क्रोधित ड्राहोमीरा घुसती है : "फिर वही बात? प्रार्थनाएँ, कविताएँ, गाने। लैटिन। लैटिन में आलसी को क्या

कहते हैं? यही तुम हो। बोलो।" दादी माँ ने बच्चे की रक्षा ज रूर की। सास और बहू में भारी अनबन थी। "देश को शासक चाहिए, न कि गद्दी पर बैठा हुआ मठ वाला और पढ़ा-लिखा पादरी।" यह अपनी राय वात्स्लाव की माँ बार बार व्यक्त करती थी। उलटे उसकी सास समझती थी कि गद्दी पर सहनशील दानिशमन्द शासक को बैठना चाहिए। बेचारा लड़का इन दो महिलाओं के बीच फँस गया।

सन् 921 में वात्स्लाव के पिता का देहान्त हुआ और देश का शासन ड्राहोमीरा ने सम्भाल लिया। वात्स्लाव अभी तेरह साल का था। उसकी माँ ने उसकी शिक्षा अपने हाथ में ली। बेटे की शादी कर दी, लेकिन वात्स्लाव का स्वभाव इतना नर्म था कि जब बाद में उसकी नवोढ़ा को दूसरा आदमी पसन्द आया तो उसे त्याग दिया और उसी आदमी से ब्याह रचा लिया। बच्चे नहीं हुए।

ड्राहोमीरा ने अपनी सास को रास्ते से हटा दिया हत्या करवा दी। ऐसा एक आख्यान कहता है और न मानने की कोई वजह नहीं है।

गद्दी पर बैठने के बाद वात्स्लव ने अपनी माँ को प्राग से निकलवा दिया। आख्यान बातते हैं कि वह स्लावों की दूसरी जनजाति में चली गई। अपनी प्रिय दादी के अवशेष वात्स्लाव ने पूरी प्रतिष्ठा के साथ उस जगह दफ न करा दिए, जहाँ बाद में प्राग कथेड्रल बनवाई गई थी।

रह गया वात्स्लाव का छोटा भाई बोलेस्लाव, दोनों नामों के माने पुरानी चेक में एक ही थे : 'अधिक यश'। उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। सन् 935 में बोलेस्लाव ने अपने बड़े भाई की हत्या कर दी। यह दुर्घटना प्राग के समीप छोटे से नगर के गिरजे के सामने हो गई। शहर का नाम तब से 'पुराना बोलेस्लाव' है

एक आख्यान बताता है कि हत्या दुःसहयोग से हो गई, बोलेस्लाव का इरादा वात्स्लाव को जान से मारने का नहीं था। लेकिन ऐतिहासिक स्थिति यह थी : चेक देश तीन ओर से जर्मनी से घिरा हुआ था, आज भी है। चेक महाराणों में एकता नहीं थी, जर्मनी में भी एकता नहीं थी। जर्मनी की ओर से हमेशा खतरा होता था। वैसे जर्मनों ने उत्तरी स्लाव जनजातियों पर पहले आक्रमण करके उनको या तो खत्म कर दिया या उनको जबरन जरमन बना दिया था।

सन् 929 में जरमन पश्चिम से चेक देश में घुस गए और बहुत बरबादी कर दी। ज यादा बरबादी रोकने के लिए वात्स्लाव ने पश्चिमी जर्मन बवारियन महाराणा से समझौता किया कि हर साल चाँदी की निश्चित राशि और निश्चित पशु-समूह बवारिया में भेज दिया जाएगा। बदले में बवारियन महाराणा वात्स्लाव की रक्षा करेगा और आगे आक्रमण नहीं करने देगा।

कुछ साल तक ऐसा चला। एक तरह से चेक देश अधीनता में थे। शान्ति की

कीमत थी। बोलेस्लाव को ऐसी कीमत पर सख़्त आपत्ति थी और शायद यही अनबन हत्या का कारण बन गई। ''क्या तुम जर्मनों की आजीवन चपलूसी करोगे?'' ''नहीं, अपने देश की रक्षा का प्रबन्ध करूँगा। यही तो चाहिए।'' शायद ऐसी बातें होती थीं और आखिर इसका नतीजा वात्स्लव की हत्या थी।

सब कुछ तरह तरह से देखा जा सकता है। एक ही बात स्पष्ट है कि दोनों भाइयों का इरादा तो अच्छा था, लेकिन जर्मनी की तरफ से खतरा कभी खत्म नहीं हुआ।

बोलेस्लाव ने भुगतान चुकाना बन्द कर दिया, लेकिन कोई 15 साल बाद नए सिरे से मजबूरन देना पड़ा।

वात्स्लाव की इस राजनीति का बहुत बाद में बीसवीं शताब्दी में बहुत दुरुपयोग हुआ।

धार्मिकता और शान्तिप्रियता के कारण वात्स्लाव का बहुत आदर होता था। बाद में पवित्र तक घोषित किया गया। रोमन कैथोलिक था आखिर उसके जमाने में कोई और ईसाई शाखा नहीं थी। फिर भी बाद में गैर-कैथोलिक भी उसे मानते थे। चेक देश और कौम का दैवी संरक्षक माना गया। प्राग के सब से बड़े चौक का नाम वात्स्लाव चौक है और राष्ट्रीय संग्रहालय के सामने ही घोड़े पर बैठे हुए वात्स्लाव की मूर्ति है। सब बड़ी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की शुरुआत अकसर वहीं से होती है।

लेकिन हिटलर के कब्जे के जमाने में महाराणा वात्स्लाव की परम्परा का दुरुपयोग हुआ। जर्मन और उनके सहयोगी इस पर जोर देते थे कि पवित्र वात्स्लाव ने कितना अच्छा समझौता किया था, चेक अधीनता कितनी दानिशमन्द राजनीति थी।

जो भी हो, आजकल भी विशेष परवों पर गिरजों में ये गीत गाते हैं

"तुम चेक देश के उत्तराधिकारी हो, अपनी नस्ल को याद करो,
न हमें न बाद में आने वालों को नष्ट होने दो"

छोटे देश के लिए खतरों की कमी कभी नहीं है। इसके ऊपर काले बादल अकसर घुमड़ते हैं, हमेशा अपने जीवित रहने के लिए किसी न किसी तरह से संघर्ष करना पड़ता है, क्योंकि महाशक्तियों का न दिल न पेट कभी भरता है।

चेक राजा तथा सम्राट कारल चतुर्थ घर में

लेख के शीर्षक की प्रेरणा शिवानी प्रेमचन्द की पुस्तक 'प्रेमचन्द घर में' से मिली। प्रेमचन्द का घर भी आजीविका के कारण बारी-बारी से अनेक जगह रहा।

चेक राजा कारल (अँग्रेज ी में चार्ल्स) का जीवन और भी जटिल था। बहुत दिन तक उनका अपना घर कहीं नहीं था।

सन् 1316 में चेक राजा यान लक्सम्बुर्ग और उसकी पत्नी एलिश्का प्रेमिस्लोव्ना के पहले बेटे कार्ल का जन्म हुआ। चूँकि प्रेमिस्ल के वंश में तब कोई उत्तराधिकारी नहीं था, इसलिए यान को चेक राज्य विवाह में मिला था, और चेक राज्य पर लगजम्बुर्ग वंश का शासन आरम्भ हुआ था।

आजकल कभी कभी सवाल उठता है कि क्या कारल चेक था भी या नहीं। हाँ, उनके पिता यान चेक नहीं थे, ऐसा भी कह सकते हैं कि घर-जमाई थे। उनको तो खूब मालूम था कि चेक राज्य का मुकुट कैसे मिला था। ऐसा ठीक हुआ था या गलत? कुछ नहीं कहा जा सकता, इतिहास इतिहास है। इसमें 'अगर' शब्द की जगह नहीं है। शायद अच्छा हुआ था, संयोगवश। सारी दुनिया में तब वैयक्तिक सम्बन्ध निश्चयात्मक नहीं थे। राजसी विवाह राजनीतिक समझौते होते थे।

एलिश्का प्रेमिस्ल वंश की बेटी की थी जो चेक देश पर सन् 1306 तक शासन करता रहा था। तो जैसे चेक में कहते हैं, एलिश्का 'लट्ठे जैसी चेक' थी। कारल का जन्म प्राग में हुआ था लेकिन राजमहल में नहीं, और उनका नाम तब कारल नहीं रखा गया था। पापा यान का स्वभाव बहुत अशान्त था, सब तरफ मौजूद होना और हर मामले में दखल देना अपना अधिकार समझते थे। कहीं न कहीं लड़ते रहते थे। चेक राजा यान के बिना यूरोप में कोई लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती, ऐसा कहते थे। उनका मशहूर सिद्धांत था कि "यह भगवान होने नहीं देगा कि चेक राजा लड़ाई से भाग जाए।" आखिर में लड़ाई में अन्धे होकर वीरगति पायी थी, लेकिन यह बहुत बाद में हुआ।

तो इस दुर्घटना से बहुत पहले सन् 1316 में यान का पहला बेटा पैदा हुआ, लेकिन चूँकि पिता को घरेलू मामलों की कोई खास परवाह नहीं थी, और स्वयं कहीं न कहीं लड़ते रहते थे, इसलिए प्राग के गढ़ का हाल बहुत खराब था। और केवल

यही नहीं, सारे देश में कंगाली और विपत्ति फैली हुई थी। प्राग में भी। वास्तव में होने वाली माँ को स्वयं सोचना पड़ा कि बच्चे को जन्म कहाँ देगी। कोई दूसरा सोचने वाला नहीं था। गढ़ में सम्भव नहीं था। एलिश्का ने जर्मन राजा लुडविग बवारियन की सहायता का प्रबन्ध कर लिया। यह तो खेद की बात है कि जर्मन राजा को चेक राज्य में शान्ति स्थापित करनी पड़ी, जबकि चेक राजा इधर-उधर व्यस्त रहते थे। लेकिन सच है कि वास्तविक चेक देश की रानी तब एलिश्का थी।

सन् 1316 के वसन्त में संयोगवश थोड़े दिन तक युद्ध में अन्तराल आया और यान अपनी गर्भवती पत्नी और बाद में नवजात बेटे को जैसे-तैसे आराम से प्राग के पुराने चौक के 'पत्थर के घंटे के' घर में ठहरा सके। वह घर वहीं अब तक खड़ा है। सुन्दर गोथिक घर है और आजकल उसमें कला की प्रदर्शनियाँ होती हैं। वहीं बारी से ग्यारहवें चेक राजा का जन्म हुआ लेकिन सावधान! वह अभी कारल नहीं था, वात्सलव था। बोलचाल की भाषा में वशीक या वाशेक। उसका नाम चेक देश में माने गए रक्षक और अपने नाना और परनाना पर रखा गया। शायद यह एलिश्का की इच्छा थी।

पति-पत्नी आपस में किस भाषा में बोलते थे? फ्रेंच, जर्मन? राजा की बेटी होकर एलिश्का को ये भाषाएँ ज रूर बचपन में सीखनी थीं, लेकिन वाशीक से चेक में बात करती थी, जैसे दुनिया की सब माएँ अपनी मातृभाषा में करती हैं। इसलिए भी कि पिता यान अपने बच्चे के पास बहुत दिन तक नहीं रहे और अपने उद्देश्य की प्राप्ति करने बार बार चले जाते थे, अर्थात् लड़ाई लड़ने। घर में जो होना है हो जाने दो। इस बार वह लुडविग बवारियन की सहायता करने गए। आपस में मदद करनी चाहिए न?

छोटे वात्सलव, घर में वाशीक ने अपने जीवन के पहले महीने शहरी घर में गुज रे। फिर भी उसकी माँ उससे कम आनन्द पा सकी। पिता को याद था कि उसका न सिफ र्बेटा है, लेकिन कुछ दुश्मन भी हैं। इसलिए वशीक को माँ से अलग करके एक साल के लिए यान के समर्थक सामन्त और दाई को सौंप दिया गया। सामन्त यान का विश्वासपात्र था। बच्चे को क्रिवोक्लात गढ़ में ले जाया गया। गढ़ बहुत सुन्दर था और आज तक सुन्दर है। तब वशीक की ज बान शायद खुलने लगी। शायद बहुत नहीं रोया, क्योंकि आया से हिला हुआ था, आखिर आजकल भी छोटे बच्चे क्रच में छोड़े जाते हैं और काम चलता है। कोई दो साल बाद कुछ समय के लिए वाशीक अपनी माँ को लौटाया गया और उसके साथ दूसरे गढ़ लोकेट में रहने लगा। यह भी आज तक खूबसूरत नज र आता है।

एलिश्का बहुत क्रियाशील महिला थी और राजकुमार को ज रूर अच्छी शिक्षा दिलवा सकती थी। प्रेमिस्ल वंश की तो थी। शायद अपने पति को ज रूरत से ज यादा

क्रियाशील लगी थी। उससे चार साल बड़ी भी थी और राजकाज में बहुत रुचि रखती थी। उधर यान के दिमाग में अकसर अजीब से खयाल आते थे। जरा शक्की थे, यह खयाल भी दिमाग में आ गया कि एलिश्का का शायद तीन साल के बेटे को चेक राजा घोषित कराने का और इसके नाम से शासन करने का इरादा है। अगर ऐसा होता तो देश के लिए बुरा भी न होता, लेकिन यान ऐसा कहाँ होने देते। तीन साल के बच्चे को सन् 1319 में गढ़ के तहखाने में कैद किया, जिसमें रोशनदान भी नहीं था। तीन साल के बच्चे के लिए यही बहुत है कि उसे कोई मानसिक आघात नहीं लगा, न कोई मानसिक नुकसान जीवन भर के लिए रहा।। बच्चे से कौन बातें करता था? बात कैसे करता था? फिर भी बाप को उसी साल तरस आ गया और बेटे को गढ़ क्रिवोक्लात वापस भेज दिया, जहाँ वह साधारण परिस्थितियों में रहने लगा। हाँ, माँ उपस्थित नहीं थी। सात साल की उम्र में माँ से एक बार फिर मिल गया, इसके बाद कभी नहीं।

तब उसका नाम अभी वात्सलव था। सन् 1323 में बाप ने बेटे को पैरिस बुलाया, जहाँ उसने होने वाले फ्रेंच राजा की हमउम्र बहन ब्लांका से उसकी शादी तय कर दी थी।

तब वात्स्लव की जि न्दगी बन गई। हाँ, फ्रेंच ठीक से सीखनी पड़ी और फ्रेंच भाषा उसकी अपनी भाषा बन गई। जल्द ही शादी हुई, दोनों बच्चों को अच्छा लगे न लगे। इस बात का ताज्जुब भारत में किसी को नहीं होगा। शादी के साथ वात्स्लव को दूसरा नाम कारल मिला। फिर उम्र भर कारल ही रहे। शायद इसलिए भी कि फ्रेंच बोलने वालों के लिए 'कारल' का उच्चारण आसान है, 'वात्सलव' का नहीं। आजकल भी विदेशी अकसर 'वाक्लव' उच्चारण करते हैं। उसने कारल चतुर्थ के नाम से इतिहास में प्रवेश किया।

दोनों बच्चे ज रूर साथ खेलते थे, कभी कभी ज रूर झगड़ पड़ते थे, लेकिन बहुत दिन तक नहीं। छोटी ब्लांका अपने माता-पिता के पास रही, कारल को बाद में लक्स्मबुर्ग की सामन्तभूमि इटली सौंप दी गई। दो साल बाद प्राग में वापस आए। बीच में चेक बोलना लगभग भूल गए, लेकिन फिर भी चेक भाषा से दिल लगा हुआ था और जो भूल गए थे वह दुबारा फिर सीखने की पूरी कोशिश की। क्या अपनी जन्मभूमि में लौटकर द्रवित हुए? क्यों न होते! उनकी अब तक की जीवन-यात्रा ज रा सी मुगल शाहजादे हुमायूँ के भाग्य की याद दिलाती है, जो ईरानी निर्वासन के बाद दिल्ली में अपने पुराने किले में वापस आए थे। लेकिन कारल का जीवन फ्रांस में हुमायूँ के जीवन से अधिक शान्तिमय था।

एक साल बाद गौना हुआ। क्या ब्लांका ने पैरिस खुशी से छोड़ा? भगवान जाने। शायद नहीं। क्या मातृभूमि में यान के शासन के बाद धीरे-धीरे फिर स्वस्थ होते हुए

प्राग आकर कारल को खुशी हुई? कौन जाने! आदत पड़ गई होगी।

ब्लांका के साथ बहुत से संगी-साथी प्राग पहुँचे और ऐसा लगा कि उनका मन प्राग छोड़ने का नहीं है। कौन जाने अगर वहीं बस जाते तो चेक राज्य में आगे फ्रेंच प्रभाव ज यादा होता, बहुत परिवर्तन हो जाता। भगवान जाने, शायद फ्रेंच देश में बसे हुए अल्पसंख्यक हो जाते। लेकिन कारल बहुत क्रियाशील थे। संक्षेप में फ्रेंच सामन्तों को अपनी मातृभूमि लौटने की सलाह दी। कारल को अच्छा नहीं लगा कि ब्लांका फ्रेंच दरबारी महिलाओं से बातें करते करते ज यादा समय गँवाती है और इसके बजाय चेक नहीं सीखती। स्थानीय दरबारी लोगों को भी अच्छा नहीं लगता था। साधारण जनता दरबार के जीवन को बहुत कम जानती थी, लेकिन उच्च वर्ग शिकायत करते थे कि राजकुमारी चेक से ज यादा जर्मन सीखती है। शायद दो भाषाएँ एक साथ सीखना उसके लिए बहुत बड़ा बोझ था। फिर भी चेक भाषा अच्छी तरह से सीख गई और लोकप्रिय हुई।

कारल को फ्रेंच रसोई की आदत थी, इसलिए ब्लांका को खाने की अपनी आदतें पति के अनुकूल नहीं बदलनी पड़ीं। कारल को विशेषकर तरह तरह का मसालेदार छोटे टुकड़ों में कटा हुआ माँस पसन्द था। माँस और मछली का शौक था, इसके साथ ब्रेड, रोटी और तरह तरह की दलिया। मध्य यूरोप की आजकल सबसे मामूली खाने की चीज आलू को तब लोग नहीं जानते थे। दरिया-तालाबों के पानी की मछलियों की कोई कमी नहीं थी और जब कारल ने अपना साम्राज्य समुन्दरों तक फैला दिया तो उनकी मेज पर समुन्दरी मछलियाँ भी आने लगीं।

पति-पत्नी खुश थे और एक साल बाद उनके बच्ची हुई। गढ़ क्रिवोक्लात में पैदा हुई, जहाँ कारल ने अपने बचपन के कुछ दिन गुज रे थे। अब ब्लांका कुछ अरसे तक वहाँ रही। जंगलों के बीच सुन्दर गढ़ था, आज तक ऐसा है।

बेटी के जन्म से निराशा हुई । सात साल बाद उसकी छोटी बहन भी पैदा हुई। बेटा नहीं आया। ब्लांका का स्वास्थ्य बचपन ही से अच्छा नहीं था। रंग निस्तेज होता था, इसीलिए उसका नाम ब्लंश (सफेद) रह गया, जो मूलतः केवल घरेलू नाम था। बाद में शायद हिसटीरिया के दौरे आते थे, जब कारल अकसर घरसे दूर रहते थे और सम्बन्धी आदि ताने देते थे कि बेटे को जन्म नहीं दिया। उसका ससुर यान अपने बेटे को राय देता था कि ब्लांका को त्याग दो। जो भी हो, बेटा नहीं हुआ। कारल के अपने बाप से सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं थे। युवराज होने के कारण कारल के कुछ खास अधिकार थे। वास्तव में देश पर शासन दो लक्समबुर्ग करते थे। पिता और बेटा, साथ-साथ और कभी कभी अलग-अलग भी। कारल को बाप का धन उड़ाना बुरा लगता था, यान को लगता था कि बेटा उसके शासन में बाधा डालता है। बाप बेटे की अनबन उत्कर्ष पर पहुँच गई, जब विधुर यान ने एक फ्रेंच महिला से विवाह

कर लिया, जिसे स्थानीय जनता ने स्वीकार नहीं किया, जबकि यान की बहू ब्लांका लोकप्रिय थी। लोगों को याद नहीं रहा कि आरम्भ में ब्लांका भी अच्छी नहीं लगती थी। यहाँ तक कि इसकी नौबत आई कि यान की पत्नी रूठकर देश त्याग गई और यान ने अपनी बहू को दूसरे शहर में जाकर बसने पर मजबूर कर दिया। लीजिए, राजसी परिवार! जनता में अकसर सास और बहू में अनबन होती है, यहाँ तो स्थिति ज यादा जटिल थी।

ब्लांका ने सन् 1347 में कारल का राज्याभिषेक देखा और साथ ही चेक रानी बनी, लेकिन एक साल बाद उसका स्वर्गवास हो गया। देहान्त कैसे हुआ, मालूम नहीं है। शायद किसी बीमारी से, लेकिन आत्महत्या की भी चर्चा होती थी। कुछ भी हो सकता था। देश में वह वास्तव में परदेसी थी, पति केवल कभी कभी उसके साथ रहता था, आसपास सब उसे दोष देते थे कि राज्य को उत्तराधिकारी नहीं दिया। ऐसे में मनःस्थिति कैसी हो सकती थी?

ऐसा लगता है कि कारल को पत्नी के देहान्त से कोई बड़ा धक्का नहीं लगा। शोक मनाने के बाद नए जोश से काम में लग गया। अपनी मातृभूमि में वापसी से ही वह दुष्कर कर्तव्यों का पालन करते थे। पहले कम से कम किसी अंश तक राजसी कर्ज चुका देने, जिनमें उनका बाप डूब गया था। पूरी कोशिश इसमें लगाई कि उनका देश और विशेषकर प्राग पूरी तरह से स्वस्थ हो जाए। पहले ही अपने पिता के साथ प्राग के मुख्य गिरजाघर की नींव रखी थी। ब्लांका के देहान्त के एक साल में ही प्राग का 'नया नगर' बसा दिया गया, जहाँ नए ढंग की सीधी सड़कें बनवाईं, विश्वविद्यालय की बुनियाद डाली, जो आजकल चार्ल्स (कारल) यूनिवर्सिटी के नाम से प्रसिद्ध है, नदी व्लावा पर नया पुल बनवाया, जिसे आजकल अकसर चार्ल्स ब्रिज कहते हैं, और आखिर प्राग के समीप गढ़ कार्ल्शटेय्न बनवाया जो क्रिवोक्लात से भी सुन्दर है। उस पुल पर आजकल पर्यटकों की बड़ी भीड़ सुबह से रात तक घूमती है। हाँ, कहना चाहिए कि पुल के दोनों तरफ मनमोहक मूर्तियाँ कारल के बाद के जमाने की हैं। सब मिलाकर कार्ल के शासन में देश पनपने लगा।

एक साल बाद कारल ने अन्ना फल्तस्का से शादी कर ली। यह जर्मन थी, भाषा की समस्या नहीं थी। यह विवाह सन् 1350 में एकदम राजनीतिक मामला था और ऐसा लगता था कि सफल होगा। उसी साल में कारल के पहले बेटे का जन्म हुआ। नाम वात्स्लव रखा गया। कितनी प्रसन्नता हुई, कितनी खुशी मनाई गई! लेकिन दो साल की उम्र में बच्चे का देहान्त हुआ। क्या माँ बहुत रोई? ज रूर बहुत रोई होगी। लेकिन दूसरों को केवल उत्तराधिकारी से मतलब था, जो नहीं मिला। आजकल हैरत होती है कि राजमहल में बच्चे की आखिर क्या क्या देखभाल की जाती थी कि देहान्त हुआ। शायद किसी बीमारी से। मध्ययुग में किसानों और कारीगरों के सैकड़ों हजारों

बच्चे मरते थे, इसका कोई ताज्जुब नहीं। कोई स्वास्थ्यविज्ञान नहीं, दवाई नहीं। लेकिन राजमहलों में भी कोई बहुत अच्छा हाल नहीं होता था। ऐयाशी तो बहुत थी, स्वास्थ्यविज्ञान कम।

अन्ना तीन साल बाद अपने बेटे से स्वर्ग में मिली।

कारल की तीसरी पत्नी फिर अन्ना थी, इस बार अन्ना स्वीद्नित्स्का। यह सलेसिया की थी, जो विवाह से चेकिया का हिस्सा बन गया। लेकिन अन्ना की माँ हंगरी की राजकुमारी थी इसलिए अन्ना का लालन-पालन किसी वजह से हंगरी के दरबार में हुआ था। तेरह साल की उम्र में उसकी कारल से शादी कर दी गई। कारल को अन्ना के पिता के राज्य से मतलब था। पहले अपने बेटे की शादी अन्ना से करने का इरादा था, लेकिन उसका तो दो साल की उम्र में देहान्त हुआ था। तो पहली अन्ना के देहान्त के कुछ महीने बाद इस अन्ना से स्वयं शादी कर ली। सैंतीस के थे। सलेसिया के राज्यक्षेत्र के साथ अतिसुन्दर जवान लड़की मिली। दो साल बाद सन् 1355 में रोमन साम्राज्य के सम्राट बने और साथ ही इटली के सम्राट बने। तो सोलह साल की अन्ना भी साम्राज्ञी बनी। हे भगवान, वह तो अभी षोडशी थी। लेकिन मध्ययुग में ऐसा होता था। हंगरी के राजमहल में अन्ना को ज रूर बढ़िया शिक्षा मिली थी। अन्ना ने भी लड़की को जन्म दिया। अफसोस, अफसोस एक छोकरी और! लेकिन सन् 1361 में आखिर वात्स्लव नाम का लड़का हुआ और जीवित रहा। बाद में वात्स्लव चतुर्थ के नाम से शासन किया। ज रा सनकी राजा था, सब कुछ अपनी मरज ी से करता था। लेकिन यह बाद की बात है। उसकी माँ केवल एक साल तक मातृत्व से हर्षित रही, सन् 1362 में उसका देहान्त हुआ। लम्बी आयु तक नहीं पहुँची, लेकिन अपने राजकीय कर्तव्य का पालन कर दिया उत्तराधिकारी को जन्म दे दिया। यह तो उसका एकमात्र सुख था, हालाँकि अस्थायी सुख।

कारल की चौथी और अन्तिम पत्नी अल्ज्बेटा पोमोरान्स्का थी। चेक लोग उसे एलिश्का कहते थे। अच्छा सामंजस्य रहा कारल के जीवन की पहली महिला उनकी माँ एलिश्का थी, अन्तिम महिला फिर उसकी पत्नी एलिश्का थी। एलिश्का नाम एलिजबेथ नाम का चेक रूप है, जिसका पोलिश रूप आल्जबेता है। पौलैंड की थी। यह भी साम्राज्ञी बनी। उसके छः बच्चे हुए। बड़ी बेटी मरकेटा की शादी अँग्रेज राजा से हुई। उसे कैसे लगा होगा, क्या नवदम्पती परस्पर बात समझ पाते थे? हाँ, तब राजदरबारों में अकसर फ्रेंच बोली जाती थी, इसी से आसानी होती थी।

कारल की चौथी शादी में भी लड़कों की किस्मत बुरी थी दो लड़कों का पैदा होते ही देहान्त हुआ। क्या कारल को बहुत शोक था जब बच्चे एक के बाद एक मरते थे? यह तो किसी को मालूम नहीं। मध्य युगीन लोगों की संवेदनाओं के बारे में बहुत कम मालूम है। प्रथम बेटे के देहान्त से ज रूर धक्का लग गया था। हाँ,

इसकी कल्पना करना कठिन नहीं है कि सिंहासन के उत्तराधिकारी वात्स्लव का कितनी सावधानी से पालन-पोषन और देखभाल होती थी, शायद ज रूरत से ज यादा। बाद में उसके स्वभाव पर इस लाड़ की छाप पड़ी होगी।

एलिश्का का बड़ा बेटा जिगमुंड हंगरी, रोमा और कुछ समय के लिए चेक राजा बन गया। यह कैसे हो सका जब कि सिंहासन पर कारल का बड़ा बेटा वात्स्लव चतुर्थ बैठा था? इन दो सौतेले भाइयों के सम्बन्ध खराब थे और आखिरकार जिग्मुंड ने वात्स्लव को सिंहासन से कुछ समय तक हटवा दिया। चेक लोगों को जिग्मुंड से नफ रत थी और उसे लाल बालों वाला दरिन्दा कहते थे। यह सब कुछ देखने के लिए कारल जीवित नहीं रहे। कारल ने दोनों बेटों का बचपन देखा वात्स्लव जिग्मुंड से सात साल बड़ा था। क्या जाने, शायद छोटे भैया से प्यार से और उदारता से बर्ताव करता था, जिससे पिता ज रूर खुश थे, जब-तब बच्चे देखने के लिए कभी समय मिल जाता था। शायद छोटा बड़े से अपनी ढिठाई के लिए कभी कभी मार भी खाता था। भाइयों के सम्बन्ध बहुत बाद में वास्तविक रूप से बुरे हुए, लेकिन यह बात अलग है। यह कारल ने नहीं देखा।

अल्ज्बेटा-एलिश्का ने पति पर कोई प्रभाव डालने की कोशिश नहीं की और राजकाज की परवाह नहीं की, लेकिन चेक फिल्म 'कार्ल्शतेय्न की एक रात' की नायिका बन गई। फिल्म आठवें दशक के आरम्भ की है, आज तक बहुत लोकप्रिय है और अब भी टी वी पर बार बार आती है। इसमें तब के अच्छे से अच्छे अदाकारों ने अभिनय किया और सब से मनमोहक इसके गाने हैं, हालाँकि चेक दर्शकों को फिल्मी गानों का इतना शौक नहीं होता जितना भारतीय दर्शकों को। फिल्म एक किंवदन्ती के आधार पर बनी है : कारल चतुर्थ ने यह गढ़ केवल अपनी समाधि और प्रार्थना के लिए बनवाया था। किसी भी महिला का वहाँ रात गुज ारना मना था, रानी का भी। एलिश्का ने बहुत रुकावटें जीतकर अपनी चतुराई से यह निषेध रद्द करवाया। यही फिल्म की सीधी-सादी कहानी है लेकिन बहुत से मज ेदार प्रसंग, संगीत और गाने भी हैं।

कारल अपनी जि न्दगी में बहुत बार घायल हुए, बहुत चोटें लग गईं, कुछ लड़ाइयों में, कुछ शिकार खेलने में। अपना ध्यान बहुत नहीं रखते थे। आश्चर्य की बात है कि बुरी दुर्घटनाओं के बाद भी ठीक हुए। तब शासक अपने उद्देश्यों के लिए स्वयं भी लड़ते थे, जब कि आधुनिक काल में हवाई जहाज ों से काम लिया जाता है। सन् 1378 में घोड़े से गिर गए और टाँग की हड्डी की बहुत नाजुक जगह टूट गई। फिर न्यूमोनिया हो गया। ऐसा आजकल भी हो जाता है, लेकिन इलाज होता है, जबकि मध्ययुग में कोई इलाज नहीं था। काम तमाम हुआ। एक कथा है कि उनके मृत्यु के क्षण में उनके बनवाए बड़े गिरजाघर का एक घंटा अपने आप बजने

लगा।

कारल का जमाना क्रूर था। कहना आसान है कि अमुक अमुक शासक ने अमुक अमुक शहर या भूखंड लड़कर लिया। लेकिन इन लड़ाइयों में कितनी जानें गईं इसकी बात नहीं की जाती। और ये सब वीर किसी के बेटे, किसी के बाप, किसी के पति थे।

उधर कारल ने विशाल भूभाग समझौते करके या शादी करके प्राप्त किए, लड़ के नहीं। अपने क्रियाकर्म के समय कारल चतुर्थ पहली बार मातृभूमि के पिता कहलाए गए और आज तक रहे। अभी कुछ ही दिन पहले के मतदान में कि सब से महान चेक कौन था कारल चतुर्थ की भारी जीत हुई, हालाँकि कुछ प्रश्न भी खड़े हुए कि क्या वे चेक भी थे या नहीं।

वह चेक थे न केवल माँ पर बल्कि पूरे दिल-जान से।

रूडोल्फ द्वितीय, हाब्सबुर्ग सनकी या दार्शनिक चेक राजा

सन् 1526 में चेक देश हाब्सबुर्ग साम्राज्य का एक हिस्सा बन गया था, जो वह 1918 तक रहा।

अजीब संयोग है कि भारत पर 1526 से मुगल शासन शुरू हुआ था।

हाब्सबुर्गों से पहले चेकीय का राजा पोलिश वंश का था। सन् 1526 में लड़ाई में दलदल में डूबकर मर गया। उत्तराधिकारी कोई नहीं था।

मुगलों से लड़ रहे शहंशाह इब्राहीम लोधी ने युद्ध में प्राण गँवाए थे।

अजीब से संयोग मानवीय जीवन में हो जाते हैं और इतिहास में भी।

हाब्सबुर्ग आस्ट्रियन थे। ये वास्तव में जर्मन हैं, जर्मन बोलने वाले, लेकिन हमेशा से उनकी अपनी परम्परा थी, अपने रिवाज थे, अपना राष्ट्र सन् 1938 तक रहा, जब हिटलर ने आस्ट्रिया पर कब्जा लेकर इसे जर्मनी में जोड़ लिया। फिर 1945 तक जर्मनी का हिस्सा रहा।

चेक जनता हाब्सबुर्ग वंश को पसन्द नहीं करती थी। उसके शासन के अन्त में सख़्त नफ रत भरी थी, लेकिन यह बहुत बाद की बात है। सन् 1918 में स्वतन्त्र चेकोस्लोवाक गणतन्त्र बन गया।

रूडोल्फ विएन्ना में सन् 1552 में पैदा हुआ। इसकी माँ स्पेनिश थी। इसके माता-पिता रिश्ते के भाई-बहन थे, शायद यह रिश्ता गलत हुआ था, और बाद में रूडोल्फ के दिमाग पर इसका कुछ प्रभाव पड़ा। अलबत्ता ऐसे रिश्ते शासकीय वंशों में मामूली होते थे। कौन जाने!

रुडोल्फ 11 साल तक विएन्ना में रहा। हाब्सबुर्ग में बच्चों को उस जमाने में अकसर स्पेन में शिक्षा मिलती थी, रूडोल्फ को भी। 11 साल की उम्र में वहाँ भेज दिया गया। बच्चों को सख़्त शिक्षा-दीक्षा मिलती थी। एक स्रोत के अनुसार उनको

प्राणदंड भी दे दिया जाता था। रूडोल्फ को नास्तिकों को जि न्दा जलता भी देखना पड़ता था। संवेदनशील लड़का था, उस पर ऐसे दृश्यों का कैसा प्रभाव पड़ा होगा!

स्पेन से वापस आने पर पहले हंगेरियन राजा बने, फिर सन् 1575 में चेक राजा बने। उसी साल में रोम के राजा-सम्राट् भी बने।

रूडोल्फ का स्वभाव बहुत विचित्र था। कहते थे कि पागल है। शायद थोड़ा सनकी थे। शायद अपने जमाने से बहुत अलग थे। और शायद उनसे कुछ आगे थे।

बड़ा बेटा और उत्तराधिकारी होकर भी शादी नहीं की। सब राजमहलों में बच्चों की बचपन से ही शादी तय की जाती थी शादी, शादी, शादी...शादी के आधार पर राज्य बनते भी थे और खत्म भी होते थे। लेकिन रूडोल्फ? निम्नलिखित वार्तालाप कहीं अभिलिखित नहीं है, लेकिन ज रूर कुछ ऐसा होता था।

"क्या? शादी? मेरे कमरों में औरत आए? औरत? कभी नहीं। यहाँ क्या करेगी, गड़बड़ करेगी। मेरे अनुसन्धान में बाधा डालेगी। शादी जो चाहे कर ले, मुझे तो नहीं चाहिए।"

हाँ, रूडोल्फ को खगोलशास्त्र और रसायन में बड़ी रुचि थी। बाद में अपनी इस रुचि को शिद्दत से पनपने दिया।

"बेटे, शादी बहुर ज रूरी है। सन्तान होनी बहुत ज रूरी है। नहीं तो सिंहासन कौन सम्भाले?"

"आदरणीय पिताजी, मेरा छोटा भाई है, उसे बच्चे पैदा करने दीजिएगा, भगवान के वास्ते, मुझे जि न्दा रहने दीजिए।"

पिता की उपस्थिति में रूडोल्फ विनम्र होते थे। जब पिता उपस्थित नहीं होते थे तो रूडोल्फ की शब्दावली बदल जाती थी।

"शादी! सन्तान। सन्तान क्या है! चीखते-चिल्लाते बच्चे। सब जगह घुसेंगे, शोर मचाएँगे, सब कुछ तोड़ेंगे, कुछ न कुछ माँगते रहेंगे। एक मिनट की शान्ति नहीं मिलेगी। मुझे क्या चाहिए? शान्ति। बच्चे? छिः! मैं तो पागल नहीं हूँ कि शादी करूँ।"

यह शब्द सुनकर उपस्थित दरबारी कनखियों से एक दूसरे को देखते थे। पागल तो नहीं है? या इसमें कोई और कमी है? तरह तरह की अफवाहें उड़ती थीं। सम्बन्धी रट लगाये थे : 'रूडोल्फ, अच्छी से अच्छी, सुन्दर से सुन्दर दुल्हन तुम्हारे लिए चुनी है। तुम्हारी ममेरी बहन ईजाबेल। क्या बुरी है?'

इस बार बिना सोचे समझे रूडोल्फ ने अक्ल से काम लिया। वह स्वयं रिश्ते के भाई-बहन की सन्तान थे। ऐसा रिश्ता दुबारा जोड़ने का नतीजा न जाने क्या होता? इसके उदाहरण अनेक राजसी परिवारों में मिलते हैं, लेकिन उस जमाने में इस पर ध्यान नहीं दिया जाता था।

'तुम्हें अच्छी लगती हो तो खुद जाकर उससे शादी कर लो। मुझे वह लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई छोकरी नहीं चाहिए।"

बार बार राजकीय सन्तान की बात "देखिए रूडोल्फ जी, आपको बच्चों की देखभाल नहीं करनी पड़ेगी, वह तो बच्चों की माँ का काम होगा। और फिर आया रखिएगा, एक नहीं। दो-तीन..."

"अफसोस। आया? हमारे घर में एक औरत और? शादी-सन्तान लेकर भाड़ में जाओ, मुझे सुनना नहीं है।"

जब दबाव बहुत बढ़ने लगा तो तरह तरह की बीमारियों के बहानों की बारी आई। बहाने थे भी और नहीं भी थे। जब ईजाबेल से शादी की तैयारियाँ तेजी से चल रही थीं, रूडोल्फ भारी क्लेश में पड़ गए। शादी टल गई और आखिर में नहीं हुई।

बीच में रूडोल्फ कई बार प्राग आए। चेक देश के राजा तो थे। प्राग के गढ़ की खिड़की से चौड़ी वादी और नदी देखकर दिल यहीं लग गया। शायद अपने रक्षकों के साथ प्राग की टेड़ी-मेढ़ी पतली गलियाँ घूमते उनके दिमाग में तरह-तरह के खयाल आते थे। यहाँ गुप्त विद्याओं के लिए आश्रय होगा। और यही नहीं यहाँ विएन्ना वाले सम्बन्धी नहीं होंगे, तंग नहीं करेंगे, उनका मन्त्र 'शादी शादी' इतनी दूरी से सुनाई नहीं देगा। यहाँ कलाकृतियों के लिए बहुत जगह मिलेगी। जानवर भी पाले जा सकेंगे। सब कुछ हो सकेगा। निश्चय हो गया। सन् 1583 में सम्राट विएन्ना से प्राग चले आए और प्राग को राजकीय निवास-नगर बनाया। राजधानी नहीं, वह तो विएन्ना रहा।

हाँ, राजनीतिक दृष्टिकोण से इसके कारण दो और थे। एक तो रूडोल्फ चेक राज्य को अपनी राजनीतिक स्थिति का सबसे दृढ़ आधार समझते थे। दूसरे प्राग की भौगोलिक स्थिति तुर्कों के खतरे से बाहर थी, जबकि विएन्ना तुर्कों के आक्रमण की पहुँच की सीमा पर था। लेकिन रूडोल्फ के लिए राजकाज भारी कर्तव्य था, जिसका पालन लगन से पूरा तो करते थे, फिर भी बोझ था। उनके शासन में प्राग संस्कृति और विद्या का केन्द्र बनना था। सारे यूरोप से कलाकारों को बुलाते और अनोखी कीमती से कीमती कलाकृतियों को खरीद कर अपने संग्रहालयों में रखते थे। संग्रह सम्भालने और व्यवस्थित रखने के लिए कर्मचारी, पुराविद् चाहिए थे। उनको भी अकसर इटली और दूसरे देशों से बुलाते थे। 'रूडोल्फी प्राग' तब यूरोप में मशहूर था। शहर 'सुनहरा प्राग' कहलाना शुरू हुआ।

ऐसा नहीं था कि रूडोल्फ को सब औरतों से नफ रत होती। उलटे सुन्दर महिलाओं में बहुत दिलचस्पी थी। बस शादी नहीं चाहिए थी। कोई गृहिणी नहीं चाहिए थी। एक इटालियन पुराविद् की सुन्दर बेटी कथरीना से बेहद प्रेम हो गया।

बहुत साल तक साथ रहे लेकिन एक घर में नहीं। यहाँ तक कि कथरीना के रूडोल्फ से छः बच्चे हुए। प्रसव के लिए कथरीना को प्राग छोड़कर एक नजदीक शहर में जाना पड़ता था, क्योंकि रूडोल्फ से उसकी पीड़ा नहीं देखी जाती थी। नवजात बच्चे को जल्दी से जल्दी आया ने सँभाल लिया और कथरीना रूडोल्फ के पास शाश्वत् प्रेमिका की हैसियत से लौट आई। रूडोल्फ ने सब बच्चों के लिए अच्छे भविष्य का प्रबन्ध किया, लेकिन अपने घर में नहीं। दुर्भाग्यवश उनके पहले बेटे का दिमाग शायद खराब था, बड़ा होकर खतरनाक अपराधी बन गया और जेल में उसका काम तमाम हुआ।

रूडोल्फ को विदेशी जानवर पालने का शौक भी था। गढ़ के चारों ओर की खन्दक में शेर पाले जाते थे, पिंजरों में विदेशी परिन्दे पाले जाते थे।

रूडोल्फ का स्वभाव बहुत अस्थिर था। कभी हँसमुख और बातूनी, कभी मितभाषी और उदास, फिर अचानक गुस्से का दौरा। उनसे बातचीत करना, किसी नतीजे पर पहुँचना मुश्किल था। केवल कथरीना, जिसे काउंटेस कहते थे, रूडोल्फ पर अच्छा प्रभाव डाल सकती थी। कभी प्यार से, कभी सख़्ती से। तब रूडोल्फ शान्त हो जाते थे, या डर भी जाते थे।

कहते थे कि रूडोल्फ के राज-दरबार में जादू-टोना पनपता था। कौन जाने। यह बात पक्की है कि रूडोल्फ तरह तरह के आलकीमिस्टों को बुलाते थे जिनका काम देखने में शायद जादू-टोने से मिलता-जुलता था और अफवाहें उड़ती थीं। रूडोल्फ की अच्छी जान-पहचान यहूदी राबीन लेवि से थी, जिसने एक स्थानीय कथा के अनुसार मिट्टी का गुड्डा बनाकर जि न्दा कर दिया और उससे सेवा करा लेता था। बनाने का रहस्य उसने रूडोल्फ से कभी नहीं खोला।

लेकिन रूडोल्फ के बुलाने पर अँग्रेज आलकीमिस्ट केल्ली भी प्राग आया। इंग्लैंड में उससे कोई अपराध हो गया था, दंड भी मिला था और पनाह चाहिए थी। रूडोल्फ के पास अफवाह पहुँची कि इस आदमी को मामूली लोहे या किसी भी धातु से सोना बनाना आता है। केल्ली आया, बहुत से प्रयोग किए, सोना नहीं बना। लेकिन एक और प्रयोग किया, इस पर बहुत बहुत साल तक काम किया । इसका नतीजा नकली जीवित इनसान था, लघु आदमी।

इसे 'होमुंकुलुस' कहते थे। क्या रूडोल्फ ने कभी इससे बात की? ''सुनो मुन्ने, कुछ तो बोलो। नहीं बोलोगे? क्यों?'' नहीं मालूम? होमुंकुलुस या इससे मिलते-जुलते पुतले का कोई अवशेष कभी नहीं मिला।

सुप्रसिद्ध खगोलशास्त्री केप्लेर भी रूडोल्फ के दरबार में रहा। यह कोई जादू-टोना ज रूर नहीं करता था, उत्साही खगोलशास्त्री था और बहुत से खगोल के

कानूनों का आविष्कार करने में सफल हुआ। आज तक प्राग में उसकी मूर्ति खड़ी है । इसकी बगल में टीखो डि ब्राहे की मूर्ति खड़ी है जो सुप्रसिद्ध डेनिश खगोलशास्त्री था। ये लोग ज्योतिषी भी थे। उस जमाने में खगोलशास्त्र और ज्योतिष में बहुत अन्तर नहीं किया जाता था।

बढ़ती हुई उम्र के साथ रूडोल्फ की सेहत और मनःस्थिति गिरती जा रही थी। उसके निर्णय और आदेश उसकी तत्कालिक मनोदशा के अनुसार बदलते रहते थे। यह सब विएन्ना में बसे हुए हाब्सबुर्ग सम्बन्धी बड़े ध्यान से देख रहे थे। रूडोल्फ वंश के लिए भारी बोझ बन गए। पहले से ही उनके छोटे भाई मथियस से कुछ दुश्मनी थी, अब हाब्सबुर्ग परिवार ने निश्चय किया कि परिवार का मुखिया और राष्ट्र का प्रधान मथियस बनेगा। मथियस ने देश के बड़े भाग पर कब्जा कर लिया। रूडोल्फ केवल चेक देश के अधिपति रह गए। तो क्या हुआ, प्राग अपने सब रहस्यों समेत रूडोल्फ का प्राग रह गया। मथियस से थोड़े दिन की सैनिक लड़ाई भी हुई लेकिन नतीजा कुछ नहीं निकला।

उन दिनों रूडोल्फ मानसिक रोग से पीड़ित थे। पहले भी एकान्तप्रिय थे, अब किसी को अपने पास आने देने को तैयार नहीं थे। हद से ज यादा शंकालु हुए, सब जगह खतरे की छायाएँ नज र आती थीं। सन् 1611 में सिंहासन त्याग देना पड़ा। सारे हाब्सबुर्ग परिवार ने उनसे मुँह मोड़ लिया। कहा जा सकता है कि उनको बाहर कर दिया। जीवन के अन्तिम साल पूरे अकेलेपन में गुज रे और सन् 1612 में अपने एकमात्र वफादार नौकर की बाँहों में उनका स्वर्गवास हो गया।

प्राग के गढ़ के भूमिगृह में जहाँ दूसरे चेक राजा दफन हैं वहीं रूडोल्फ भी दफन हैं। अपने सुनहरे रहस्यमय प्राग में। हाब्सबुर्ग वैसे अकसर वियेन्ना में दफन होते थे।

कार्ल चतुर्थ के सिवाय प्राग के लिए शायद किसी शासक ने इतना नहीं किया था, जितना रूडोल्फ द्वितीय हब्सबुर्ग ने किया।

रात और कोहरा

अर्नोश्त लुस्तिग

''अरे अब भी यही बाल और दाढ़ी।'' बैंडमास्टर अफ सर कारल ओबर्ग बोला।

उसे ताज्जुब हुआ कि अध्यापक की शक्ल नहीं बदली। आगे बोला : "सिफ ं जो चालाक है वही जि न्दा रहेगा, ऐसा कहते हैं, दाढ़ी वाले। क्या समझते हो, बाल न कटवाना, शेव न करना कोई चालाकी है? अब भी समझते हो कि जो अगला वसन्त देखेगा वह अगले साल भी जीवित रहेगा?''

अफ सर बैंडमास्टर को अध्यापक के उत्तर की प्रतीक्षा नहीं थी। चलते-चलते अध्यापक एक शब्द भी नहीं बोला। कमांडर साहब ने अध्यापक को अपने क्वार्टर में बुलाया। अफ सर नहीं समझा कि कमांडर को अध्यापक से क्या चाहिए।

आधा रास्ता काट चुके बूढ़े अध्यापक कान बगक में अफ सर ने अपने को बूढ़े पेड़ की बगल में जवान पेड़ जैसा महसूस किया। बूढ़े पेड़ की जड़ों की भूलभुलैया में जहरीले साँप छिपते हैं। बूढ़े अध्यापक की पीठ झुकी हुई थी। आँखें बुझी हुई थीं। अफ सर की नीली आँखें थीं। सुडौल छरहरा था, दाढ़ी घुटी हुई थी, उसके काले बूट चमक रहे थे।

थोड़ी देर बाद अफ सर का अलसैशियन कुत्ता उनके साथ हो लिया।

''इधर आ, कातिल।'' अफ सर बोला, ''कहाँ भटक गया? यह तो खतरनाक है। यहीं कहीं कोई कुत्तिया होगी।"

बहुत सर्दी थी। हवा बन्द थी। सर्दियों के मौसम वाला सन्नाटा। सर्दी के मारे दलदल जम गई।

"अब भी तुम्हारे कितने बाल हैं, दाढ़ी भी है, दाढ़ी वाले।" अफ सर आगे बोला, उधर हमारे उत्पादन के लिए समुद्री आयल की कितनी कमी है। बाहर से लाना ज रूरी है। कदम बढ़ाओ, दाढ़ी वाले, पाँच मिनट और का रास्ता है।"

इसी सुबह अफ सर ओबर्ग बहुत व्यस्त रहा था। एक यहूदी अन्त्येष्टि तान को मार्च बना दिया था। अगले हफ्ते सब सुनेंगे।

प्लेटफार्म से और आती हुई रेलगाड़ियों की आवाज ें आती थीं। दोनों के इंजन

की हू-हू सुनाई देती आई थी। इंजन चालक एक-दूसरे से मिलते थे। हू-हू जुड़कर दूरी में गुम हो जाती थी। अदृश्य रेखा दूरी में खो जाती थी।

"कुछ लोग खामोश रहकर अपने को बड़ा समझते हैं। तुम्हारी मर्जी, दाढ़ी वाले। अब जल्द ही पहुँचेंगे, दाढ़ी वाले।"

ओबर्ग को खयाल आ गया। "तुम्हारे न सिफ ं पिछले हफ्ते के जैसे बाल और दाढ़ी है, बल्कि तुम्हारा अपना नाम भी है। यहाँ तक कि शहरी कपड़े पहने हो। तुम्हें आभारी होना चाहिए।"

वह सीटी बजाने लगा। अध्यापक का चेहरा उड़ती निगाह से देखा।

अध्यापक हेनरी ब्लेय ने पीठ सीधी करने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हुआ। चलते चलते थोड़ी गर्मी होने लगी, लेकिन बहुत थक गया। कुत्ता इधर-उधर दौड़ रहा था, सूँघता था, गुरगुराता था। तेज चलने से भी अध्यापक को बहुत गर्मी नहीं मिल सकी। कभी वह बच्चों को कम से कम दो-दो सटकर सोने की और एक दूसरे को बाँहों में भरने की राय देता था, ताकि कुछ गर्मी मिल जाए। गर्मी हो तो भूख भूल जाएगी, उसने सोचा।

कुत्ता कमांडर के घर के सामने रुक गया।

"शान्ति शान्ति, कातिल।" अफ सर कुत्ते से बोला, "तुम्हें इनसानी जानवर पसन्द नहीं हैं क्या?"

कुत्ता ओबर्ग को आशापूर्ण, कमांडर साहब वाली निगाह से देख रहा था।

"तुम जल्दी करो, दाढ़ी वाले, कमांडर साहब से मिलना है। समय पर पहुँचना है। पिछले हफ्ते मिलते-मिलते रह गए।"

खारल ओबर्ग ने अध्यापक को अन्दर जाने का इशारा दिया और उसके पीछे चला।

2

कमांडर साहब बीनेनश्तक अपने बेटे के साथ पार्क में सैर कर रहा था। कमांडर की पत्नी नहीं थी। उसका केवल बारह साल का बेटा था, जो उसके पास रहने आया था। कमांडर पूर्वी मोर्चे से घायल होकर वापस आया था। उसे और उसके बेटे को संगीत का शौक था, कोई दूसरा बन्धन उनमें नहीं था।

कमांडर अपने बेटे को लिखना-पढ़ना, भौतिकी और गणित सिखाता था। अनुशासन सिखाता था। परिन्दों और जानवरों के रहस्य जानना सिखाता था। मोटरों के आधार बताता था।

सर्दियों में दलदल बर्फ से जम जाती थी। वसन्त में बर्फ पिघलती थी। यह मोटरों के लिए बुरा था। मोटरों की मरम्मत करना और चालू करना मुश्किल हो

जाता था।

छावनी के फौजियों में कानाफूसी चल रही थी कि कमांडर साहब के दुबले-पतले सुनहरे बालों वाले, नीली आँखों वाले बेटे का दिमाग ठीक नहीं है। वह फरिश्ता-सा लगता था और अपनी माँ से हू-ब-हू चेहरा मिलता था। कुछ फौजी कहते थे कि कमांडर साहब ने उसके दिमाग का एक हिस्सा आपरेशन कराके निकलवा दिया था, ताकि वह बिलकुल अनुशासित बने और केवल 'जी हाँ', 'जी नहीं' और 'जो हुक्म' कहने की आदत डाल ले।

उसकी बड़ी-बड़ी आँखें कभी कभी लाल हो जाती थीं। उसकी खोपड़ी लम्बी थी, माथा चौड़ा था और कान बड़े से। उसकी त्वचा बहुत नर्म थी, निचला होंठ ज यादा बड़ा था और लगातार जीभ फेरने से गीला रहता था। उसकी जीभ व्यस्त रहती थी। और कुछ नहीं तो अधखुले होंठों में से जीभ निकालता था।

लड़का बाप का व्याख्यान सुन रहा था। क्या पिताजी भूल गए कि क्या बजा है? ऐसा लगता था कि लड़के को मुड़कर पीछे देखने का शौक है, अतीत से दिलचस्पी है, आती हुई और जाती हुई रेलगाड़ियों से दिलचस्पी है। और सब किस्म की मोटरों, मशीनों से। कभी-कभी लड़का डरा-सा लगता था, हालाँकि कोई खतरा नहीं था। कभी कभी उदासीन होता था, केवल जानवरों और मोटरों पर ध्यान देता था। मानो कि नहीं बोल सकता हो। और कभी कभी चिड़चिड़ा होता था, फिर दुबारा उदासीन हो जाता था।

जहाँ तक निगाह पहुँचती थी, नंगे पेड़ों के द्वीप दूरी तक फैले हुए थे और इसके भी आगे उँचे नंगे पेड़ बादलों को छूते थे। दिन रात चलती मोटरों का शोर दूर दलदलों तक पहुँचता था।

कमांडर साहब ने समीप के जंगलों के पेड़ गिरवाए थे। भागे हुए कैदी ऐसे अपाहिज बने हुए जंगलों में किसी भी तरह नहीं छिप सकते थे। यहाँ से बहुत दूर तक जहाँ तक निगाह नहीं पहुँचती अभी तक अनछुए जंगल थे, शान्त और घने। उनके बीच में महल टी नम्बर दो और एक और कैम्प था।

लड़के ने पूछा : "लोगों के बीच जानवरों का क्या हाल हो जाता है?"

"क्यों?"

"उन बच्चों की वजह से पूछता हूँ जो यहाँ हैं।"

"अच्छा अच्छा", कमांडर बोला। उसे यकीन नहीं था कि क्या लड़का कैम्प में कैद किए हुए बच्चों को जानवर समझता है। इनसानी जानवर। आशा है कि लड़का नहीं जानता कि कैम्प के तारों के उस पार लोगों का क्या हो जाता है।

जब भी लड़का अपने कमरे से निकलता तो उनको देखता उनके पास से गुज रता था, जैसे जर्मन बच्चे देहातों में, स्कूल में, शहर में गुज रते हैं। तारों के उस

पार लोगों को आते देखता था, जाते कभी नहीं देखा था, फिर भी उनकी संख्या नहीं बढ़ती थी। क्या इनसान थे? जानवर? इनसानी जानवर?

कभी कभी लड़का सोचता था कि कितनी अजीब बात है। क्या किसी भूमिगत नदी में डूब जाते हैं? या किसी गहरी खाई में गिर जाते हैं?

कमांडर साहब ने उसके कन्धों पर हाथ रखकर व्यक्त किया कि जैसे लड़के से मर्दों वाला व्यवहार कर रहा है। लड़के ने एक सेकेंड तक बाप को आँख मिलाकर देखा, जैसे किसी अजनबी को देखा हो।

"तारों के किस तरफ मेरी माँ थीं?"

"तुम्हारी माँ?"

जब बहुत सर्दी थी और फौजी बाजे वाले खुले में अभ्यास नहीं कर सकते थे? लड़का कम से कम मोटरों के मुरम्मतखाने में आता था। चिकने धुएँ की लहरें देखता था जो हवा दलदल के ऊपर से, जंगलों के ऊपर से और उन भंडारों से लेकर आती थी जिनके विषय में बाप उसे कुछ बताना नहीं चाहता था। उड़ती हुई धुएँ की लहरें किन्हीं अक्षरों, अंकों या चिह्नों-सी लगती थीं। कभी कभी धुएँ के थक्के घने होते थे और उनसे राख गिरती थी मानो कि काला पानी बरसता हो।

"तुम्हें फौजी नक्शे पसन्द आएँगे?" कमांडर बोला।

"क्यों?" लड़के ने पूछा।

लड़के को एक और शौक था। उसे नई फौजी लारियाँ पसन्द थीं जिन पर सफेद वृत्त में लाल क्रूस थे। तीन हफ्ते पहले फौजियों को इनमें से लाशें उतारते देखा था। बाद में उन्होंने लारी का पिछला भाग दलदल की ओर मोड़ दिया, और बाकी लाशें उंड़ेल दीं। मुर्दा शरीर लट्ठे जैसे लुढ़कते थे या आलू के बोरे जैसे दलदल में गिरते थे। शुरू में कमांडर लड़के को यह देखने नहीं देता था, लेकिन न देखना आसान नहीं था, क्योंकि ऐसा नियमित रूप से होता था।

झील दोपहर को भी सूर्यास्त जैसा नजारा पेश करती थी। सतह पर राख जम जाती थी और इसके ऊपर बादल और धुएँ के प्रतिबिम्ब नज र आते थे। झील गहरे रंग के सागर का टुकड़ा सी लगती थी। उसके ऊपर राख छिड़कने वाले चिकने धुएँ के थक्के घुमड़ते थे। आसमान, झील और धुआँ लड़के के लिए कोई समझ में न आने वाला सन्देश था। 'इनसानी जानवर', वह मन ही मन दुहराता था। इनसानी जानवर, जानवरी इनसान। अनजाने उसने जीभ निकाली।

'होश में आओ', बाप ने उसे झिड़क दिया। उसका झिड़कना अकसर फालतू होता था।

कस्बे या कैम्प में कोई नदी नहीं बहती थी। सिफ ं झील और दलदल थी। पुल भी नहीं थे। एक दिन लड़के ने पूछा कि कोई पुल कहाँ है। पुल उसे जर्मनी में रहने

के दिनों से याद थे। पुल से एक किनारे से दूसरे किनारे तक जाने में उसे कोई छिपा हुआ तर्क नज र आता था।। यहाँ गिरजे का केवल एक बुर्ज बच गया था। जब तक कसबा पोलिश था तो जर्मन विमान चालकों का निशाना बन गया था। इसके बाद तोपचियों का। गैसिस में कुछ जर्मन परिवार भी रहते थे। कस्बे का वातावरण फौजी था। लड़के को दूसरे जर्मन इलाके पसन्द नहीं थे, वह भी उनको पसन्द नहीं था। उसे उनका संगठन, युवा संघ, पसन्द नहीं था, न हिटलर युवा संघ, हालाँकि उनकी अच्छी वर्दियों पर चमकीली चाकू अच्छी लगती थी।

"नक्शा देखकर तुम्हें समय का अनुभव मिलेगा घड़ी के समय से कुछ भिन्न, और चाहो तो नक्शे से परम्परा और साहस का भी रस लोगे। बाद में शायद किसी महिला का रस भी ऐसी महिला का, जैसी तुम्हारी माँ थी।" शब्द 'माँ' कुछ अविश्वास से बोला।

क्या लड़के के लिए यह सब कुछ ज यादा जटिल है?

ऐसा लगा कि लड़का नहीं सुन रहा है। जीभ की नोंक कसे हुए होंठों के बीच थी। उसे मालूम था उसका जीभ निकालना बाप को अच्छा नहीं लगता। लेकिन अकसर याद नहीं रहता था। कभी कभी लड़का तुतलाता भी था। बाप को उसके तुतलाने से नफ रत थी और अनसुनी करने की कोशिश करता था। गैराज पर आलेख था जो लड़के को बेहद पसन्द था : "हम मर जाने के लिए पैदा हुए हैं।" यह देखकर उसे लाल क्रूस वाली लारियाँ याद आ जाती थीं। एम्बुलेंस, जिसकी कोई खिड़की नहीं है। पंख रहित परिन्दे जैसी। इसमें कोई कमी नहीं थी, उलटे कुछ अतिरेक था। टीन की गर्दन, जिसमें ज ोरदार मोटर थी, आठ सिलिंडर वाली। और जिस जगह परिन्दे के पैर होते हैं वहाँ दो मोटे टीन के ट्यूब हैं, जो पंखों या हाथी की सूँड जी तरह लारी के अन्दर मुड़ते हैं, बाहर नहीं। एम्बुलेंस की खिड़कियाँ नहीं हैं। क्यों? ये ट्यूब अन्दर क्यों मुड़ते हैं? एम्बुलेंस में लोग बैठ जाने के क्षण से लेकर एम्बुलेंस खाली हो जाने तक अन्दर क्या होता है? बाप ने कहा था कि मर्द कभी नहीं पूछता। न पूछना, अपने को न थोपना। लड़के के घने सुनहरे बाल पीछे की ओर सँवारे हुए थे। नीली आँखें चमकती थीं, रहस्यमय दुनिया उसे घेरे थी। जो नहीं जानता था इससे उत्तेजित होता था, जिसका उसे आभास ही था, उससे भी उत्तेजित होता था। दुनिया से एक और सुन्दर दुनिया थी, एक ग्रह में, दूसरा ग्रह अजनबी झील में, दूसरी झील, जिसका जल दूसरी झील में बहता था। चलती हवा में छिपी हुई तेज आग, जिसकी तुलना में दोपहर की धूप भी मन्द थी। रोशनी में लड़के को अँधेरा नज र आता था और अँधेरे में रोशनी। एक अँधेरे में दूसरा अँधेरा, एक छाया में दूसरी छाया।

कमांडर साहब को उसका लड़का फरिश्ते जैसा लगता था। सिफ र्फरिश्ते निर्दोष हैं और वजह पूछते हैं। नेता लोग 'क्यों' नहीं पूछते। "यह क्यों होना था?" उसे नीचे

नाम के दार्शनिक की पंक्तियाँ याद आईं। उस दार्शनिक ने लिखा था कि भगवान मर गया है, उसके साथ विवेक मर गया और सोचा कि शक्तिशाली व्यक्ति पैदा करने के लिए सौन्दर्य, नाम, पितृत्व और पितृत्व का महत्त्व बहुत कम है। ऐसा कमांडर सोचता था। नए ढंग का प्रेम सख़्त है। ईसाई प्रेम जैसा कोमल नहीं है, उस यहूदी सूअर के प्रेम जैसा नहीं है जो गनीमत से तोमन सलीब पर मर गया था। न जाने क्यों मेरा बेटा जड़बुद्धि है जाने किस की वजह से। मुझे इससे सख़्त प्रेम करना है, बिना किसी कमजोरी के, तरह तरह के 'अस्पतालों' के खयाल आते थे। जिस व्यवहार को 'दयालुता' कहते हैं उसका भी खयाल आया।

कमांडर साहब ने लड़के को स्कूल भेजना बन्द कर दिया था। उसकी शिक्षा अपने हाथ में ली थी। बेटा दिशाएँ नहीं समझता था दक्षिण, उत्तर, पूर्व और पश्चिम। चार मूलतत्त्व जल, आग, भूमि और हवा याद नहीं थे। केवल तीन अंक याद थे। जो तीन से ज यादा था वह नहीं समझता था। उसे मालूम नहीं था कि दलदल दो मूलतत्त्वों की हो सकती है जल और भूमि। प्रकाश और ध्वनि पर ध्यान एकत्र कर सकता था और आवाज ें समझता था। लेकिन दोनों एक साथ नहीं समझ पाता था।

कमांडर बोला : "जानवर लोगों से बहुत कुछ सीख सकते हैं लेकिन लोगों को जानवरों से छूत लग सकती है। जीभ निकालना बुरी आदत है।" फिर आगे बोला : "जानवरों की अशुद्धता से मुझे चिढ़ है। इनसान जानवर को धर्म सिखाता है।"

उसने कहीं पढ़ा था कि चौथी शताब्दी तक बच्चा मार डालना कोई अपराध नहीं होता था। मन ही मन अपनी भूतपूर्व बीवी को डाँटता था कि अपने इस बच्चे का गला अपनी कोख में ही उसने क्यों नहीं घोंटा था।

ऐसा लगता था कि लड़के के ध्यान को जानवरों का उल्लेख जागृत नहीं कर सका। इस क्षण में। उसे केवल मोटरों में रुचि थी। फिर मुँह में जीभ से खेल रहा था, मानो उसकी कल्पना में जीभ कोई चक्की होती। उसकी चौड़ी लाल जीभ थी।

"जब तुमसे बोलता हूँ तो तुम क्यों नहीं सुनते?"

"मैं देख रहा हूँ।" लड़के ने जवाब दिया।

"क्या देख रहे हो?"

"एम्बुलेंस, वह परिन्दा-सा लगता है। या मछली। या राजहंस।"

"अच्छी गाड़ी है।"

"इसकी कोई खिड़की नहीं।"

"संक्रमणहारी गाड़ी है। चार नयी गाड़ियाँ तुम्हें दिखा दूँ।"

लड़का बोला : "इसके अजीब से सूँड हैं।"

कमांडर साहब ने सोचा यह शायद लड़की होना चाहिए थी। इसका क्या करूँ?

एक अफ सर याद आया जिसका बच्चा मुर्दा पैदा हुआ था। बहुत पहले वह ऐसा सोचने के लिए अपने को फटकारता था। औरत का दोष आदमी के दोष से हमेशा भारी होता है। हे भगवान, यह लड़का जीभ से क्यों खेलता रहता है। बीमार बच्चे पैदा क्यों होते हैं? इसके खिलाफ क्या किया जा सकता है? डॉक्टर और विज्ञानी इसमें बहुत पीछे रह गए हैं। क्या उसकी भूतपूर्व बीवी उसको सजा देना चाहती थी? उससे बदला लेना था? उसे जीवनभर कलंकित करना चाहती थी? उसकी बदनामी करना? कैम्प में यह अच्छी बात है कि औरतों को पीट सकते हैं, जैसे पहले दास पिटते होते थे। एक जमाने में कैम्प में वेश्याएँ भेजी जाती थीं। हाँ, उसे सिफ ं अपने बेटे से नफ रत नहीं, अपनी भूतपूर्व बीवी से नफ रत है। संयम से रहने की कोशिश करता हूँ। यह भारी संघर्ष है। मुझी को मालूम है किस बुरी इच्छा से संघर्ष है।

लड़का आसमान देख रहा था। हवा बन्द थी, धुआँ आसमान पर चित्र खींच रहा था। काले धुएँ के थक्के बड़े फूले हुए गुब्बारे जैसे जमा होते थे। नीला आकाश अन्तहीन था।

"शाम को कंसर्ट होगा।" कमांडर बोला, "सुनने चलेंगे।"

वह लड़के को पानी में छोटे मोटे पत्थर फेंकते देख रहा था। लड़का हर बार एक साथ तीन पत्थर फेंककर जल की सतह पर बनते छल्ले देखता था। छल्ले फैलते जा रहे थे लेकिन सामने वाले किनारे तक नहीं पहुँचते थे।

बाप बोला : "पत्थर पानी में फेंकना अच्छा लगता है क्या? बोलते क्यों नहीं?"

लड़के को वह सुबह याद आई जब बाप सोने के कमरे में आ गया था। तब बर्लिन में रहते थे। माँ ने कहा था कि अब तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं, जाओ यहाँ से। बाप माँ को पीटने लगा। माँ की नाक से खून बहने लगा। "तुम से नफ रत है।" माँ बोली, "जानवर हो, जाओ। नफ रत है।" लड़का कोठरी में छिपा हुआ सब कुछ सुन रहा था। न बाप को न माँ को मालूम था। लड़का केवल अनुमान कर सकता था कि इस सब कुछ का क्या अर्थ है। बाप चला गया, माँ लेटी रही। माँ ने बाप से क्यों कहा कि घिन आती है, उबकाई आती है?

कभी-कभी जल देखते-देखते यह सब याद आता है, कभी धुआँ देखकर या सतह पर छल्ले। कभी अजीब सा लाल क्रासवाला एम्बुलेंस। अकसर बाप की उपस्थिति में। याद आ जाती है। तब लड़का चार साल का था, बाप उसकी अल्पबुद्धि पर गुस्सा हो गया था। बच्चे को बहुत घूँसे मारे थे। ऐसा कई बार हुआ था। साथ ही बाप रोता था। बाद में जब माँ जाने कहाँ चली गई थी तब उसने पीटना बन्द कर दिया था।

अब बाप बोला : "जानवर समझना लोगों को भी समझना है। और लोगों को समझना है युद्ध समझना। यह सब समझने में संगीत से मदद मिलती है।"

लड़के ने पूछा : "जानवर एक दूसरे को क्यों मार डालते हैं?"

"इसी वजह से कि लोग भी ऐसा ही करते हैं।" कमांडर साहब ने जवाब दिया, "अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए। हम एक ही पृथ्वी पर रहते हैं। हर एक इनसान में कोई जानवर छिपा हुआ है।"

"वह देखो", लड़के ने कहा।

"कहाँ?"

कमांडर साहब ने आसमान की ओर देखा। कैम्प टी नम्बर दो से उठता हुआ धुआँ अब कुछ हलका हो गया। शायद ऊपर हवा चलने लगी थी। पतले टुकड़े थक्कों से अलग होते जा रहे थे। कुछ थक्के हवा के झोंकों से काले राजहंस जैसे लगते थे। कुछ फूले हुए चेहरे जैसे, कुछ आँख के खाली गड्ढे, बिखरे हुए पाउडर, अजीब सी चढ़ाई हुई भौंहें जैसे नक्शा जो कमांडर साहब पढ़ता है। नक्शे पर छोटे बिन्दु गाँव और बड़े बिन्दु शहर हैं। सबसे छोटे बिन्दु कैम्प हैं।

महल और कैम्प टी नम्बर दो सबसे नजदीक थे। इतनी दूरी पर कि चीखना-चिल्लाना और गोली चलाने की आवाज सुनाई नहीं देती थी, फिर भी इतनी नजदीक कि घना धुआँ और कभी-कभी जलती हड्डियों की दुर्गन्ध इधर तक पहुँच सकती थी।

क्या बच्चे के दिमाग में बुद्धि की कम से कम एक चिंगारी झलकेगी? सब इसकी माँ का दोष है, जिसने कैम्प में आ रहने से इनकार कर दिया था और अनशन इतने दिन तक किया था कि उसका मासिक धर्म बन्द हो गया था। भूतपूर्व बीवी से कमांडर को नफ रत है, उसकी कोख, गर्भावस्था, प्रसव की याद से ही नफ रत है। और बीवी को उसकी सैनिक व्यवस्था से, उसके मिशन से कितनी नफ रत थी।

"चलो वापस, मुझे कमान में किसी से मिलना है।" कहकर लड़के के कन्धे पर हाथ रखा। लड़का चौंककर थोड़ा हट गया। विरोध? डर? शर्म? नफ रत? समझ में न आने वाली प्रतिक्रिया। जो भी हो या इस सब कुछ का मिश्रण हो, कमांडर चिड़चिड़ा हो गया, गुस्से की लहर उभर गई। लेकिन अपने तक रख ली। सिफ ं उसकी आँखों में मनहूसियत नज र आई, जिसे वह व्यक्त नहीं कर सका। पिताओं और पुत्रों के बारे में सोचा। चार मूलतत्त्वों के बारे में सोचा। एम्बुलेंस, और लड़के से मुँह फेर लिया। आसमान की ओर देखा।

3

हेनरिक ब्लेय कमांडर साहब का हाल में इन्तजार कर रहा था। पिछले बृहस्पतिवार से सिर खपाता था कि कमांडर ने उसे क्यों बुलाया। उससे मिलने की तकलीफ कभी नहीं की थी। बेटे को पढ़ाने के लिए? नहीं। हो सकता है कि कमांडर अपने बच्चे

पे उसकी राय जानना चाहता हो। अध्यापक को इस क्षेत्र में बहुत अनुभव था। पिछले हफ्ते अफ सर ओबर्ग ने उल्लेख किया कि कैम्प टी नम्बर दो में सक्लिन बी की गैस से सिफ र्क कपड़े साफ नहीं किए जाते हैं और सिफ र्क खटमल, जूएँ और चूहे नहीं मार डाले जाते। थोड़ी देर पहले उसने टिप्पणी क्यों की कि ब्लेय किसी भी हालत में कमांडर को कोई नसीहत देने की हिम्मत न करे? फिर उसने पूछा कि क्या मालूम है ब्लेय जैसे कितने बूढ़ों को खतना करने से पहले नपुंसक बना दिया था?

कमांडर साहब के कमरे से आवाज ें आती थीं, हँसी सुनाई देती थी। दरवाज े पर कैलेंडर टँगा था। ईस्टर का सोमवार लाल अंकित था। कमरे में किसी स्थानीय अफ सर से प्रेमाख्यान की गप हो रही थी। बाहर से रेलगाड़ी की आवाज सुनाई दी।

कमांडर साहब के दफ्तर के हाल की खिड़की से बर्फ से ढँके हुए पेड़ दिखाई देते थे। दोपहर को बर्फ पिघलती थी। तीसरे पहर दुबारा जम जाती थी। बूँदें मोती बन जाती थीं। छोटे बर्फलम्ब छत से लटकते थे। हॉल की दीवारों पर जर्मन सेनापतियों के आवक्ष चित्र टँगे थे।

गैलरी से आहट आई। पूर्वी मोर्चे की लड़ाई में कमांडर साहब की बाईं टाँग घुटने के नीचे कट गई थी।

हेनरिक ब्लेय के दिमाग में कल्पना आई। दूर ईरान में डेढ़ सौ पीढ़ियों पहले एक शासक यहूदियों को खत्म कर देना चाहता था, लेकिन उसकी रानी ने उसे रोक दिया। कितनी दाना, साहसी और न्यायी महिला थी।

अध्यापक ने मन ही मन उसकी तुलना अनाथालय की सबसे बड़ी लड़की नाओमी से की।

नाओमी की काली, गहरी और उदास आँखों की याद के साथ कमांडर साहब के लड़के की याद आ गई। अध्यापक के पेट में चूहे दौड़ रहे थे, थोड़ा दर्द भी था। ज यादा बुरा क्या है, भूख या अपमान? अपमान या कायरता? यहाँ इनसान जानवर बन गया है। यह परिवर्तन उसे कब मामूली लगने लगा? और ज यादा बुरा क्या है सन्नाटा, जो घने वनों से फैलता है या यहाँ की बोझिल खामोशी ? इस समय का डर या वह डर जो पाँच मिनट बाद होगा? किस डर से इनसान कमजोर हो जाता है, किस डर से उलटे साहस बढ़ता है? क्या वह डर जिससे सावधानी मिलती है ? या वह डर जो दूसरों को ध्यान में खींचता है? अध्यापक जानता था कि इनसानियत इसी में है। जो दूसरों को ध्यान में नहीं लाता वह छोटा होता जा रहा है, दूसरों के जूतों के नीचे धूल बनता जा रहा है, आखिर में कीचड़ बन जाता है। इतना तो अध्यापक को मालूम था और इस पर डटे रहा।

यहाँ कितनी देर से इन्तजार कर रहा है?

हाल साफ-सुथरा था, गर्म था। बूढ़े की दाढ़ी में जो हिमकण फँस गए थे वे

पिघल गए। उसकी आँखें धुन्ध-सी लगती थीं, जो झुटपुटे में जमीन पर छाती है और पौ फटते ही उठती है। दुबारा उसने कैलेंडर देखा जिस पर ईस्टर का सोमवार अंकित था। अपनी भूख याद करना नहीं चाहता था, न ईसाई धर्म को, जो क्षमा, प्रेम और सहानुभूति पर इतना बल देता है, न नाओमी की काली उदास आँखों को।

वारसा के अनाथालय को याद किया। याद आया कि कैसे तय होता था कौन-सा बच्चा कहाँ सोऐगा, किस प्लेट से खाना खाएगा। कुछ बच्चे खाने के बाद सो जाते थे, कुछ खेलना चाहते थे।

कमांडर साहब के कमरे का दरवाज ा बन्द रहा। तीस मिनट बाद अफ सर ओबर्ग कमरे में दाखिल हुआ। उसके साथ उसका कुत्ता आया।

"चलो, दाढ़ी वाले।" ओबर्ग बोला, "उठो। मिलने का समय चूक गए। शायद अगली बार।"

4

बाहर अफ सर ओबर्ग घोड़े पर सवार हुआ। अध्यापक पैदल चला। चारों ओर सन्नाटा था। अफ सर ने घोड़े की गर्दन पर थपकी दी। मोटे चमड़े के दस्ताने पहने था। घोड़ा चौंक गया, कुत्ता भौंक गया।

घोड़ा चित्ती वाला सफेद था। उसका लम्बा वंशवृक्ष था। ओबर्ग ने उस पर सरकस में कब्जा किया था । पहले यहूदी कलाबाज उस पर सवार होती थी। इसको कैम्प टी नम्बर दस में कलाबाजी करने भेज दिया गया था। फिर उसे शाश्वत अग्नि दिखाई गई थी जिसमें वह भी जल गई। वहाँ उसकी अन्तिम कलाबाजी हुई थी। अफ सर को सरकस का शौक था। सरकस के बाजे याद करते ही खुशी होती थी।

"जर्मनों के बाद कोई कहीं वापस नहीं आएगा, दाढ़ी वाले। न पोलैंड न जर्मनी। हजार साल बाद कोई पूछे कि अन्तर क्या है तो जवाब मिलेगा होनी अनहोनी नहीं हो सकती। यही अन्तर है, दाढ़ी वाले। कोई अपवाद नहीं। रात और कोहरा। योजना। इनसानी जानवर।"

घोड़े के खुरों की आहटें पत्थर पर बज रही थीं, एक, दो, तीन, चार, घोड़ा सुन्दर था।

"तुम कुछ हफ्तों से मज े में हो, दाढ़ी वाले।" ओबर्ग घोड़े की पीठ पर से बोला, "सप्ताह के बीच कमांडर ने बुलवाया है।"

घोड़े ने बार बार मुँह से बू को धकेल दिया। अफ सर ने लगाम कड़ी कस दी। घोड़ा हिनहिनाया। कुत्ता दलदल की तरफ सूँघता था। शायद वहाँ से कोई गन्ध आई थी जो न आदमी सूँघ पाता है न घोड़ा। शायद कुतिया की गन्ध, कुत्ता कुतिया की गन्ध मीलों से सूँघ सकता है।

कड़ाके की सर्दी थी। शून्य से नीचे कम से कम पन्द्रह डिग्री।

"बाल और दाढ़ी," ओबर्ग बोला, "क्या तुम्हें नहीं मालूम, दाढ़ी वाले, कि जो आज फायदा है वह कल तक नुकसान बन सकता है। तुम अपनी जोरू से ज यादा दिन तक जि न्दा रहे, अपने परिवार से भी और कहा जा सकता है कि बहुत से परिवारों से भी। अचरज में डालने का तुम्हें शौक है। अगर कल कोई कलाबाजी दिखाओ तो मुझे अचरज नहीं होगा। तुम दुबले पतले भालू से लगते हो। तुम बस घटिया खानाबदोश नट हो, दाढ़ी वाले। ढकोसला न करो। अगले बृहस्पतिवार तक न जाने क्या हो सकता है। कदम बढ़ाओ दाढ़ी वाले। छोटे छोटे कदम। तुम चुप हो मानो कुछ बताने का इरादा हो।"

घोड़े से मीठी सी गर्म साँस आ रही थी। वह स्वस्थ और बलवान लगता था। पूँछ हिलाई। ओबर्ग की सेवा में वह सारी कलाबाजी भूल गया होगा। उसकी यहूदी तो कागज जैसे जल गई थी। सौ ज्वालाओं में एक ज्वाला। घोड़ा रुक गया, मुड़कर देखा।

अध्यापक बिना कहे रुक गया।

"आ गए।" अनाथालय के सामने खड़े रहो। सड़क सी 13। आगे कैंटीन और तरह तरह के होस्टल थे, कैंटीन के पास ही कसीनो।

"यहाँ जो चाहो कर सकते हो दाढ़ी वाले। कोशिश करो। तुम्हारी टोली को तुम्हारा बहुत इन्तजार है।"

हेनरी ब्लेय खामोश रहा। आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा था।

"तुम्हारे बाल और दाढ़ी समुद्र के तल पर पड़े हुए पत्थर जैसे हैं।" मुस्कराकर ओबर्ग बोला, "हाँ दीढ़ीवाले, क्या जानना चाहते हो कैंप टी नम्बर दो में तुम्हारी जोरू की क्या गति हुई? बच्चे उसके साथ गए, समझे?"

5

"आया हूँ।", हेनरिक ब्लेय जोर से बोला। अन्दर से दरवाज ा बन्द करके अपने शब्दों की प्रतिध्वनि सुनी। यकीन कर लेना चाहता था कि यहाँ है, साँस लेता है, जि न्दा है। है जि न्दा? किसी ने जवाब नहीं दिया।

घर में ठंडी सीलन की दुर्गन्ध थी। अध्यापक इन्तजार कर रहा था। सब कहाँ हैं? काँप रहा था। उन सबके नसीब क्या हैं? इसका सामना कैसे करे? 'कब' और 'कैसे' शब्दों से डरता था। 'क्यों' अब पूछता भी नहीं था।

अभी जि न्दा है, यह भी चमत्कार है। ज यादा बुरा क्या है मौत या अपमान? अपमान में मौत, सोचा।

रोज उसे पराजय महसूस होती थी। सबसे पहली पराजय अब तक याद है।

खिड़कियों में शीशे के बजाय चिथड़े और कागज के टुकड़े ठूँसे थे। बाहर से कड़ाके की सर्दी घुसती थी। यह तो अच्छा है कि हवा नहीं चलती, उसने सोचा।

नल की टोंटी पर बर्फलम्ब जम गया था। बच्चे अब बिस्तर में होंगे, कुछ गर्मी पाने के लिए एक दूसरे से सटकर। यह उनको सिखाना आवश्यक भी नहीं था।

"वापस आया हूँ।" आवाज दी। नीचे की मंजि ल पर लम्बे गलियारे के अन्त में अटारी की तरफ सीढ़ी थी। वहाँ उसका पलँग था। बगल में कोठरी थी, जहाँ आश्रम की सबसे बड़ी लड़की नाओमी सोती थी। बाकी बच्चे नीचे पुआल के गद्दों पर सोते थे। सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते अध्यापक बच्चों की साँस, चूहों की आवाजें और सीढ़ियों की चरमराहट सुन रहा था। चले जाने से पहले बच्चों को बिस्तर में रहने को कहा था। भूख और सर्दी को भगाने का यही तरीका है।

तीसरी सीढ़ी पर कदम रखा तो इसकी चरमराहट दो सौ बच्चों की आवाजों की प्रतिध्वनि जैसी लगी। जिनके नाम, चेहरे और आवाज ें उसे अब याद नहीं रहीं। समय और स्थान की दूरी से इनसान का सिफ र्् चेहरा याद रहता है। जब याद भी खो जाती है तो पहले चेहरा भी खो जाता है, फिर नाम भूल जाता है। आखिर में याद की याद भी। मेरा चेहरा भी पहले जैसा नहीं है तो क्या हुआ? अपनी चिड़चिड़ाहट, बेचैनी और अन्तहीन परेशानी नहीं दिखाता था। जो आदमी किसी दूसरे काल में, दूसरे स्थान पर सफल हुआ था। सम्मानित होता था। शायद नामी भी था, वह अब नहीं है। केवल उसके दिल मैं ताजा घाव रह गया। आग जलाने के लिए थोड़ी सी लकड़ी और कागज के बदले में कुछ भी देने को तैयार है। क्या करे ताकि बच्चों को यह सब कुछ शरीर, देह और स्थान गन्दगी और कुरूपता का भंडार न लगे? निराशा का एक ही कण आशा के एक दाने में बदले? क्रूरता से दयालुता में? बच्चे अब सब कुछ से डरते हैं।

मन ही मन खिड़कियाँ देखीं, जिनसे धूप और हवा अन्दर आती थी। याद आया बच्चे कैसे पढ़ते थे। जर्मन, अँग्रेज ी, फ्रेंच आदि भाषाएँ। व्याकरण, गणित, भौतिकी, इतिहास। मन ही मन बच्चों के गाने सुनाई दिए। और यहाँ बस कड़ाके की सर्दी है। हाँ, अन्दर इतनी कड़ी नहीं है जितनी बाहर, यही सही।

उनको अकसर क्या सिखाया जाता है? नैतिकता। क्या चाहता था कि भले-बुरे में अन्तर करना सीखें? क्या चाहता था कि यहाँ भी यह भेद करें? चाहता था कि आज को भूल जाएँ और कल की राह देखें। वह तो धोखा था। झूठ बोलता था। उनको भ्रम में डालता था।

उसका जीवन झूठ क्यों बन गया? क्या छोटी से छोटी आशा भी बहुत है ? क्या निराशा आशा से दयालु है क्योंकि हालाँकि क्रूर है, फिर भी सच्ची है? इस दुनिया में जहाँ सिफ र्् इस आशा पर जिया जा सकता है कि कुछ देर और, एक दिन और,

एक रात और अगले दिन को, अगली रात को जिया जा सकेगा, हालाँकि मालूम है कि चारों तरफ सब मर चुके हैं? कौन कौन मर चुका है, किसकी जगह मैं जि न्दा हूँ? इसी क्षण किसको मेरे बजाय मार डाला है?

इस विचार की प्रतिध्वनि दिमाग के अन्दर से कनपटियों से टकराती थी।

'अभी यहाँ हूँ,' दुहराता रहता था।

6

नाओमी आ गई।

"जब आप नहीं थे तो तीन लड़कियों को ले गए।" बोली। आवाज रूखी थी मानो कि 15 साल की लड़की नहीं, हजार साल की बुढ़िया हो। उसके रूखे चेहरे पर, काली गहरी आँखों में ममता थी। उसकी आँखों में बर्फ भी थी और उदासी भी। उसकी आवाज उदासीन और साथ ही आग्रही थी।

"नताशा, दियाना और अनेत को ले गए," उसने कहा।

"अनेत?" अध्यापक की आवाज टूट गई। उसने बस बोलते हुए रुक जाने का बहाना किया।

"उन लोगों ने कहा कि उसे इलाज चाहिए। और यह कि उसके लिए अच्छा होगा। और यह कि आपको मालूम है। वे उसे एम्बुलेंस में ले गए। बिना चिह्न के एम्बुलेंस में, वह नहीं चल पाई।"

"बिना खिड़की के एम्बुलेंस में? कब?"

"आपके जाने के एक घंटे बाद।"

"कौन ले गया?"

"ड्राइवर और उसका सहायक। कमांडर साहब का लड़का भी था। ड्राइवर के पास बैठा था। शायद अफ सर भी था। उन लोगों ने कहा कि छानबीन करने आए हैं।"

"मुझे कुछ भी नहीं मालूम।" हेनरिक ब्लेय बोला।

क्या किसी को घसीटकर लेजाकर मार डालना अब अपराध नहीं रहा? कई करोड़ों, शायद अरबों मारे हुओं पर अपराध लगाकर हत्यारों को निरपराध घोषित करना सम्भव है? क्या हत्या अब अपराध नहीं रहा, क्योंकि अपराध से पहले हर गवाह को मार डालेंगे? क्या यह अपनी नस्ल को शुद्ध करने का जर्मन तरीका है? उसने सोचा कि कोई कितना कम कर सकता है। रक्षा बिलकुल नहीं कर सकता।

"पिछले बृहस्पतिवार को भी बिना खिड़की की एम्बुलेंस आई थी।" लड़की ने कहा।

नाओमी बूढ़ी औरतों की तरह सिर पर रूमाल बाँधे थी। उसके घुटे हुए काले

बाल फिर से बढ़ रहे थे।

"यहाँ सर्दी है।" अध्यापक बोला।

क्या लड़की ने ओबर्ग को देखा था? क्या ओबर्ग कमांडर साहब के हाल में उससे इन्तजार कराकर इधर वापस आया था? क्यों?

"आप कहाँ गए थे?"

नाओमी की आवाज रुँधी हुई थी। अध्यापक को मालूम था कि यह नहीं रोएगी। रोने की आदत छूट गई। आने वाली पीढ़ियों के लिए यह सन्देश छोड़ सकेंगे : इस युद्ध में बच्चे नहीं रोते थे।

"कमांडर साहब से मिलना था, उसके क्वार्टर में।"

"आपसे क्या चाहिए था?"

नाओमी की आवाज में सन्देह था। नाओमी आठ साल की थी जब कस्बे में उसके सामने उसके माँ-बाप को पत्थर मार के मार डाला गया था और उसको वारसा में भेज दिया गया था।

तीन बच्चियों को घसीट ले गए। क्यों? छानबीन की गई। क्यों? नाओमी गले में कपड़ा लपेटे थी। पुराने कोट की आस्तीन थी। हेनरिक ब्लेय को मालूम था कि कोट के नीचे कुछ पहने नहीं है। अपने कपड़े और मोजे छोटे बच्चों में बाँट दिए थे। स्वेटर अनेत को दिया था, जिसको कुछ घंटे पहले घसीट ले जाया गया था। उससे पहले दियाना को उनके मोजे दे दिए थे और नताशा को पुराने कपड़े के बदले में जूते दे गई थी।

उसमें माँ की जैसी ममता थी हालाँकि माँ नहीं थी और कभी नहीं बनेगी, उसमें हजारों सालों से पाली हुई नारीवत स्वार्थहीनता थी।

उसने सोचा कि हालाँकि वैसे भी सबका काम तमाम होने वाला है, फिर भी औरतों का हाल और भी बुरा है। क्यों? यह पूछने की शक्ति उसमें नहीं रही। जानना नहीं चाहता था और ज रूरी भी नहीं था।

काली पड़ी हुई दीवारों पर नज र दौड़ाई। उन पर मक्खियाँ, जूएँ और खटमल जमकर मर गए थे। या बच्चों ने कील से या पिन से मार डाले थे। सुबह तहखाने में सर्दी के मारे मर गया चूहा मिल गया। अध्यापक ने अपना कम्बल नाओमी के कंधों पर ओढ़ा दिया।

"मैं यह सोचना भी नहीं चाहता वे क्या क्या करते हैं।" अध्यापक ने कहा।

"हमारा क्या होगा?" नाओमी ने पूछा। उसकी आवाज में बचपन भी था और प्रौढ़ता भी थी। निराशा थी, संवेदना भी थी, त्याग भी था। अनुभव भी था।

दीवारों पर फफूँदी बनती थी। गीले धब्बे फैलते जा रहे थे। जब ठीक दोपहर को बर्फ पिघलती थी तो छत छूती थी।

नाओमी बोली : "मुझे मालूम था कि जब आप नहीं होंगे तो किसी को ले जाएँगे।" वह जानती थी कि अध्यापक उसके सवाल का जवाब नहीं देगा। उसके चेहरे में क्रोध और बेबसी थी। क्रोध अध्यापक से था। अपने से था, सब कुछ से था। उसे देख रही थी। लम्बा सेकिंड था। लड़की की आँखें चमक गईं। फिर बुझ गईं, आन्तरिक तनाव त्याग में बदल गया, त्याग पराजय में।

अध्यापक ने कहा : "वे क्रूर हैं, बाहर से भी और अन्दर से भी। उनसे सहानुभूति या दया की आशा नहीं की जा सकती।"

उसके सर्दी के मारे नीले पड़े हुए और पिघलती बर्फ से भीगे हुए होंठ काँप रहे थे। किसी मवेशी की आँतों से बनाए हुए मोजे देख रहा था। मन ही मन लड़की का सवाल दुहराया : हमारा क्या होगा? सवाल के जवाब से डरता था। जितना उसे मालूम था इतना लड़की को बताया। अब इसकी तैयारी करनी है कि बच्चों को ईस्टर सोमवार को क्या बताएगा। चाँद की ओर देखा। छत में छेद से चाँद नज र आता था। चाँद पर भी पहाड़ और वादियाँ हैं। अध्यापक को उनके नाम याद हैं। उसकी याददाश्त अब तक ठीक है, इसकी तो खुशी होनी चाहिए। सब कुछ कितना दूर है। चाँद को याद करते उसने न जाने क्यों कमांडर साहब का क्षीणबुद्धि लड़का याद आ गया, उसकी नीली आँखें। उसकी हिलती हुई जीभ, उसकी विस्मित खोई हुई निगाह। और जर्मन-यहूदी बच्ची नाओमी की उदास निगाह। ईस्टर सोमवार। डरावना पूर्वाभास। सर्दी थी, हाथ, पाँव, नाक ठिठुरते थे। भूखा था। चाँद बादलों में से झाँक रहा था। कुछ देर बाद ध्यान में आया कि नाओमी सो गई है।

7

ठंड के मारे हेनरिक ब्लेय जाग गया। कितनी देर सोता रहा? छत के छेदों से आसमान नज र आता था। कुछ मिनट सोया? कुछ घंटों से? कितने दिनों से सोते में सपना नहीं आया। आज तीन सपने आए।

पहले सपने में अन्धी लड़की और बहरे-गूँगे लड़के लिए साथ समुद्र के किनारे सैर कर रहा था। लड़की अब अन्धी नहीं थी और बड़ी हो गई थी। उसकी बहिन साथ थी, जो पहले कैम्प टी नम्बर दो में मर गई थी। दोनों बच्चागाड़ी धकेल रही थीं। सब नए शहर तेल अवीव की ओर चल रहे थे। सूरज चमक रहा था, समुद्र के नीले पानी में उसका प्रतिबिम्ब चमक रहा था। रेस्तराँ से संगीत सुनाई दे रहा था।

दूसरे सपने में कमांडर साहब आया था। बातें हो रही थीं। कमांडर साहब बोला : "हम दुनिया को वहीं लौटाते हैं जहाँ वह पहले थी। और वहाँ धकेलते हैं जहाँ होनी चाहिए। दुनिया के इस हिस्से के जर्मनीकरण की तरफ कदम बढ़ाते हैं। लेकिन इन

देशों की आबादी हमारे रास्ते में बाधा है। सिर्फ अच्छी नस्ल के लोग जर्मन बनने लायक हैं। बाकी के नसीब में कड़ी मेहनत करना लिखा है। और खत्म होना। यह सोचना है कि बच्चों और बूढ़ों का क्या करें। मैं तो कोशिश करता हूँ । तुम लोगों को समझना पड़ेगा।"

कमांडर साहब उठ खड़ा होनेवाला था, लेकिन उसके शरीर का सिर्फ ऊपर का हिस्सा उठा। उसके विकलांग पैर नहीं हिले। वह बोला : "बहुत से पिताओं के सीने में माँ का हृदय धड़कता है। अगर तुम्हें बाल कटवाने और दाढ़ी घुटवानी है तो सोमवार तक इन्तजार करना पड़ेगा। शायद ईस्टर सोमवार तक।"

चरमराता हुआ दरवाज ा खुल गया। कमांडर साहब का लड़का दाखिल हुआ।

"तीन।" वह बोला।

"चार।" कमांडर बोला। फिर आगे कहा : "अगर तुम दोनों की तरह से हम मुड़-मुड़कर पीछे देखें तो आगे कभी नहीं बढ़ सकते।" और आखिर : "खेद है, बूढ़े, मैं कमांडर यहाँ हूँ। वहाँ नहीं। बस।" बच्चा जीभ निकाल-निकालकर होंठ चाटता था। जीभ में ज रूर दर्द होगा। जीभ मुँह से बड़ी है।

तब सपना कट गया। फिर लम्बे हरे खामोश जंगल नज र आए। हेनरिक ब्लेय को मालूम नहीं था कि क्या वह अपनी आवाज सुन रहा था या कमांडर साहब की। जंगल छोटे रेलवे स्टेशन में बदल गया। यह तीसरा सपना था। पहरेदारों ने माल डिब्बों के दरवाज े खोल दिए हर डिब्बे में चालीस आदमी या बारह घोड़ों के लिए जगह थी और बच्चों को उतरने का हुक्म दिया।। बच्चों ने इधर-उधर निगाह दौड़ाई।

"जी हाँ, कमांडर साहब।" स्टेशन मास्टर ने कहा।

सहायक इंजन बाकी डिब्बे फाटक की तरफ धकेल रहा था। हवा साफ थी। आकाश समुद्र जैसा नीला था, घास के मैदान में फूल खिल रहे थे। बच्चे पगडंडी से ऊपर पेड़ों की ओर चल दिए। नीला आकाश धूप में नहा रहा था। हेनरिक ब्लेय का सिखाया गाना गा रहे थे।

"जब अनजानी दूरी जाओगे
तो चलो झंडा उठाए
छोटे थैले में बड़ी आशा भी समाए
जब सब से लम्बी ट्रेन में बैठोगे।"

धूप में नहाता हुआ घास का मैदान और पेड़ नज र आए। फौजी ट्रेन हिल गई। इंजन ने लम्बी सीटी दी, रफ्तार बढ़ाई। रेलगाड़ी वापसी के लिए चल दी। इसमें बच्चों का सामान रह गया था। सन्नाटा छा गया। गला घोंटने वाला भारी सन्नाटा। इतना सन्नाटा उसने इससे पहले नहीं जाना था। बच्चे चलते थे और गाना गा रहे थे। जंगल के किनारे तक पहुँचे। अचानक पेड़ जर्मन फौजी बन गए। कुर्सियों पर बैठे

थे, पैर फैलाए, हाथों में बन्दूक लिए। गोली अभी नहीं चली थी। बच्चे मुँह खोलते जा रहे थे, लेकिन उनका गाना अब सुनाई नहीं दे रहा था। भारी सन्नाटा। अध्यापक और नाओमी अग्रसर थे। जंगल के पास गहरी खाई के किनारे तक पहुँचे। जहाँ भी देखा, हर पेड़ जर्मन फौजी बन गया।

अध्यापक तीनों सपने भूल गया। छत में छेद देखे। आसमान पर पूरा चाँद चमकता था। तारे चमकते थे।

8

"सोमवार को यहाँ से जाना है।" अध्यापक बोला।

"आज तो रविवार है। कहाँ जाना है?" नाओमी ने पूछा।

"सामान बाँधने की चिन्ता न करो, सब ठीक होगा।" अध्यापक ने जवाब दिया।

दो रेलगाड़ियों की सीटी सुनाई दी जो प्लेटफार्म के पास से गुज र रही थीं। एक आई, दूसरी रवाना हुई। यही समय-सारिणी थी, जिसका ध्यान जरमन सेना रखती थी, युद्ध में कोई भी गड़बड़ हो न हो। यहाँ यातायात खत्म होने वाला नहीं था। कितने दिनों, कितने हफ्तों से उनके अस्तित्व पर उसकी छाप छोड़ी जा रही थी। रेल की पटरियाँ। भाप की सीटियाँ। पहियों का शोर। पहले इंजन के ब्रेक की चरमराहट। इसकी आवाज । डिब्बों के धक्के। किस किस को कहाँ-कहाँ से ले आए? फ्रांस के यहूदियों को? ग्रीस की औरतों को ? पुरुषों को या बच्चों को? जर्मन युद्ध के आरम्भ से यहूदी बच्चों को अपने सबसे बड़ा दुश्मन सझते थे। उनको बिना दया, बिना अपवाद के खत्म कर देते थे। यह अध्यापक की समझ में कभी नहीं आया। यहूदी बच्चों ने जर्मनों का क्या नुकसान किया है? कैम्प वाले जवान अफ सरों की क्रूरता भी समझ में नहीं आती थी। क्या इसलिए इतने क्रूर हैं कि अभी जवान हैं? जवाब नहीं मिलता था। कम सोया था, नींद खराब थी। हथेलियों से गाल मल लिया। सर्दी बहुत थी।

नाओमी उससे मिलने ऊपर आई। "क्या आपको मेरे भाई का कुछ पता चला?" उसने पूछा।

"नहीं, अफ सर ने लेओन की बात नहीं की।"

"क्या आज हमें मार डालेंगे?"

"कल तो नहीं मारा।"

"आज कल नहीं है।" नाओमी ने आपत्ति की।

"मैं तो कहता हूँ कि नहीं मालूम, क्योंकि मुझे नहीं मालूम।"

नाओमी की आँखें कुएँ जैसी गहरी हो गईं, जिसमें पहली भी और आखिरी भी

बूँद डर रही है। दोनों ऐसी बात करने की कोशिश में थे कि दूसरे को न डराएँ। हेनरिक ब्लेय जानता था कि लैकी किसकी याद दिलाती है। उसकी प्रियतमा की। सुडौल, छरहरे कन्धे, काले बाल। अन्तिम बार जब उसे देखा था तब उसके लम्बे बाल थे। धुले हुए, खुशबूदार। उसे उसके हाथ याद थे। वह ऐसी महिला थी जिसको यकीन था कि उसका शतीश सिफ ं उसका अपना है। उसकी मुस्कान नाओमी की मुस्कान जैसी थी। उसमें दासता के हज ारों साल थे और महिला की स्वतन्त्रता और बराबरी की पहली अबाबील भी थी। कुछ बच्चों के साथ वह भी सबसे पहले शून्य में बदल गई थी।

नाओमी ने कहा : "आप डर न दिखाइए और बच्चों को डरने न दीजिए।"

"चिन्ता न करो।"

"और आप?"

वह सोच रहा था कि बच्चों से क्या कहे। जाते समय न झुको, सिर न झुकाओ। शायद आसमान पर मित्र-सम्बन्धी विमान नज र आएँ जो जर्मनी को दंड देने आ रहे हैं। सारा जर्मनी राख बन जाएगा। बहुत से शहर अब तक राख बन चुके, अध्यापक दोनों सम्भावनाएँ सोच रहा था। जो वारसा में या कैम्प टी नम्बर दो में हो गया था वह जर्मनों ने यहाँ कितनी बार स्थगित कर दिया। रेलगाड़ियों की आवाज ें सुन रहा था। पहली रेलगाड़ी चली जा चुकी। दूसरी खाली कर दी गई। प्लेटफार्म पर अब सन्नाटा था।

"चलो।" लड़की ने कहा।

नीचे आकर बच्चों को देखा। बच्चों ने अर्द्धवृत्त बनाया ताकि बात हो सके।

"मैं तुम लोगों को प्राचीन ईरान के बारे में कुछ बताना चाहता था। जवानी के दिनों में वहाँ गया था।"

उसे नाओमी की आँखों में राहत और बाकी बच्चों की आँखों में सवाल नज र आए। हाँ, अन्धी लड़की और बहरे-गूँगे लड़के की आँखों में नहीं। निगाह से फ र्श पर मरे हुए चूहे के अवशेष ढूँढ़े, लेकिन नहीं मिले। उसने सोचा कि अन्धी लड़की को क्या-क्या नज र नहीं आ सकेगा और बहरे-गूँगे लड़के को क्या-क्या सुनाई नहीं दे सकेगा? यह तो अच्छा है।

"बताना चाहता था कि क्या अच्छा है।" वह आगे बोला। क्या झूठ बोला? क्या सच?

खिड़की से बादल नज र आए। धीरे-धीरे आसमान पर तैर रहे थे। सुबह का पहला उजाला रात को भगा रहा था। घर की दीवारें कब से ढहती जा रही थीं। अध्यापक ने सोचा कि अब शायद सारा घर ढह जाएगा। यह रात छोटी थी। बच्चे खाँस रहे थे। उनको सर्दी लगती थी। एक को दूसरे से सर्दी-जुकाम लग गया। भूखे थे।

कस्बे से परे के दलदल से धुएँ, आग की दुर्गन्ध आ रही थी। आने वाले वसन्त के साथ जमीन ठंड, सड़ाव, नमी और बर्फ की साँस निकालती थी। सब कुछ कीचड़ में बदलता था।

"हमारे लिए बहुत कुछ अच्छा है।" बोला। कुछ देर तक बच्चों से निगाह चुराई। "कुछ भी इतना बुरा नहीं है कि इसमें थोड़ा सा अच्छा भी न हो।" यह सच भी था और झूठ भी। मुझे सम्भलना चाहिए, सोचा।

आसमान पर जिस जगह पहले सन्ध्या तारा चमकता था उसी जगह भोर का तारा चमक रहा था।

पाँच बजने में पाँच मिनट। अध्यापक ने कई बच्चों के चेहरों पर हाथ फेरा। उनकी त्वचा रूखी सी, गन्दली सी थी, उसने मन ही मन अपने दिवास्वप्न पकड़े रहने की कोशिश की। मोटर की आवाज सुनाई दी। उसे मालूम था कि थोड़ी देर में लाल क्रूस वाली एम्बुलेंस घर के सामने रुक जाएगी। उसे छानबीन से भी बुरी घटना की आशंका थी।

अध्यापक गिन रहा था कि किसी के दरवाज ा खटखटाने तक कितने मिनट बाकी हैं। कोई आकर बताएगा कहाँ जाना है। मन ही मन सोचा कि बच्चों के जल्दी सोकर उठने की और तैयार होने की किस तरह से तारीफ करे। नाओमी ने इसका ध्यान रखा कि बच्चों के जितने कपड़े हैं वे सब पहन लें।

उसने अपनी कौम के होने वाले खून-खराबे का किस्सा सुनाया, जो आखिर फिर भी नहीं हुआ था। जैसे वह अब बच्चों के सामने खड़ा है, इसी तरह से तब ज रूर बहुत से पिता अपने बच्चों के सामने खड़े थे। ज रूर सोचते थे कि क्या क्या ठीक किया था, क्या क्या दूसरी तरह से करने से इनकार कर दिया था, किन माताओं ने इन बच्चों को जन्म दिया था और इसका नतीजा क्या है। तब उस फ ारसी शासक की एक बीवी का चित्र उसकी आँखों के सामने उभर आया। होने वाली घटनाओं से डर रहा था, लेकिन मालूम था कि सामना उसी को करना है।

हेनरिक ब्लेय दरबार की शान का वर्णन कर रहा था। शानदार बरतन, लम्बी मेज, बढ़िया खाना, सुन्दर से सुन्दर फूल। चाँदी के दीपकदानों में लगाई मोमबत्तियों की रोशनी का वर्णन करते मोम की पतली धाराएँ याद आईं जो पतली मोमबत्तियों के बुझने पर लकड़ी की मेज पर बहती थीं। फिर सिंहासन और इसके तकियों का उल्लेख किया।

साथ ही मालूम था कि बच्चे वास्तव में क्या सुन रहे हैं कीलों वाले चार जूतों की आहट, कुत्ते का भौंकना। बच्चे मुड़-मुड़कर देखते थे लेकिन अध्यापक बोलता जा रहा था मानो कुछ न सुना हो। शाह की एक बीवी की बात कर रहा था जिसका चेहरा उसकी प्रिया और नाओमी से मिलता-जुलता था। हेनरिक ब्लेय ने दरवाज ा जोर

से खटखटाता सुना। "हम सब इकट्ठे रहें।" बोला, "सब ठीक होगा।"

उसकी इच्छा थी कि 'ठीक' शब्द से बच्चों को शक्ति मिले, कि यह शब्द पकड़कर दृढ़ रहें। वह खुद 'ठीक' शब्द पकड़े रहा। नाओमी को दरवाज ा खोलने का इशारा दिया। लात मारने की आवाज आई। अफ सर ओबर्ग ने लात मारकर दरवाज ा तोड़ दिया।

"ठीक है, ठीक है।" अफ सर ने जर्मन में कहा, "ज रूर, बहुत अच्छा।" मुस्कराकर अध्यापक को देखा। "अब भी बाल और दाढ़ी है, दाढ़ी वाले, मानो कुछ हुआ ही न हो।"

भोर की सर्दी से उसका चेहरा लाल था। बोला : "यहाँ दलदल की बदबू है, दाढ़ी वाले। ठंड है। ठंड से सन्न पड़ गया हूँ।" कमरे, अध्यापक और बच्चों पर निगाह दौड़ाई। कुछ बच्चे लकड़ी के चप्पल पहने थे। सच में सरकस में तमाशा बन सकते हो, हा हा! अध्यापक कलाबाजों का परिवार इकट्ठा करने में सफल कैसे हुआ। थोड़ी देर बाद उनको जमीन और आसमान के बीच बिना रस्सी के कलाबाजी का मौका मिलेगा, हा हा! खूब नाचेंगे।

एम्बुलेंस के पास ड्राइवर और कमांडर साहब का बेटा खड़े थे।

"तैयार हो?" ओबर्ग ने पूछा, "थोड़ी देर में तुम लोगों को गरमी लगेगी।" उसकी आवाज में जल्दी थी, शैतानी थी, उपेक्षा थी। उसे पक्का विश्वास था कि ये नस्ल से सब अशुद्ध घटिया प्राणी हैं, जिनको जल्दी से जल्दी मिटाना है। साथ ही सोचा कि इस समय उसका अपने बाजे और बाजे वालों पर ध्यान न देना कितनी लापरवाही है। इन घटिया किस्म के प्राणियों पर ध्यान देना समय गँवाना है। किसी ने न जाने किसने कहा था कि खतना किए पुरुषों के लिए ठंडे देश में रहस्यात्मक जादू है क्योंकि ये ताड़ों और रेत के देश से आए हैं। उनमें सहरे के लोगों का खून है।

"बाल और दाढ़ी। तुम कहना नहीं मानते, बुड्ढे।" फिर कमांडर के बेटे से कहा : "क्या तुमने कभी समुद्री सूअर के बारे में सुना है?" निगाह अध्यापक की पुराने फैशन की पतलून पर दौड़ाई। "तुम कितने लोग हो?"

अध्यापक ने पूछा : "कहाँ जाना है?"

"दूर भी है और निकट भी है, दाढ़ी वाले। चिन्ता न करो। तुम लोगों को दूसरी जगह ले जाएँगे, बस। सब नियमानुसार है। तुम लोग हमेशा के लिए बस जाओगे। समझे न? आबादी बढ़ाने की बात नहीं है, दाढ़ी वाले। खाने-पीने की चीजें संरक्षित करने की भी बात नहीं है। खाने-पीने की चीजें साथ ले जाना ज रूरी नहीं है। देखा जाएगा। लगता है कि लड़कियाँ लड़कों से जल्दी जवान होती हैं।" उसने नाओमी की ओर देखा। "प्रकृति ने तुम लोगों को बहुत कुछ दिया। तुम अपने साथ कुछ औषधियाँ ले जा सकते हो अगर अपने पास हैं। क्या बच्चों को गर्भनिरोध के बारे

में बताया? बच्चे कैसे बनते हैं? लड़कियों की छातियाँ एकदम कैसे बढ़ती हैं? लड़कों को गीले सपने क्यों आते हैं? गर्भ कैसे रह जाता है? शरमाना ज रूरी नहीं, दाढ़ी वाले। पूर्व की तरफ जरा बढ़ना है, दाढ़ी वाले।"

अफ सर को मालूम था कि अध्यापक और कमांडर का बेटा सावधानी से सुन रहे हैं। "मै गाड़ी पर अधिक भार डालना नहीं चाहता।"

"दस बच्चे हैं।" हेनरिक ब्लेय ने कहा, "और मैं हूँ, कुल मिलाकर ग्यारह।"

"ठीक है, काम चलेगा।" ओबर्ग ने कहा, "इतने आसानी से जा पाएँगे।"

"कहाँ?" हेनरिक ब्लेय ने दुबारा पूछा।

पल भर के लिए अध्यापक ने उन लोगों को याद किया जो जीवित नहीं रहे। लेकिन अब जि न्दा लोगों का ध्यान रखना है।

9

एम्बुलेंस कस्बे और कैम्प से बीस कदम दूर, झील और दलदल से ज यादा दूर खड़ी थी। गाड़ी कोणीय थी, जैसी युद्ध में बनी हुई हर हर जर्मन एम्बुलेंस होती थी। मिलों में घटिया नस्ल के दास काम करते थे।

"चलो, कातिल, जल्दी।" अफ सर ने कुत्ते को आवाज दी, "जल्दी।"

कुत्ता गुर्राकर एम्बुलेंस के पास दौड़ा आया। अन्दर घुसने की हिम्मत नहीं थी।

एम्बुलेंस का पिछला भाग अधखुले घर की तरह था। दूरी तक दलदल फैली थी। टूटे हुए पेड़, जंगलों की जगह ठूँठ। एम्बुलेंस के पास कमांडर साहब का लड़का जीभ निकाले खड़ा था।

"मेरे हुक्म पर सब अन्दर जाकर बैठो। धकेलना मत, कहीं किसी को ठोकर न लगे, टखना न उतरे, टाँग न टूटे। दो मिनट में।। यहाँ कागज पर तुम्हारे हस्ताक्षर चाहिए, बूढ़े, कि यहाँ से जा रहे हो और सब कुछ ठीक-ठाक छोड़कर। मैं यह अपनी राजी से नहीं करता और अकेला नहीं हूँ, मेरे ऊपर बर्लिन है। हम सब भला चाहते हैं, हर तरह से, दाढ़ी वाले। तुम्हारे लड़के-लड़कियाँ अपनी मँगनी कर सकते हैं। शादी भी कर सकते हैं।"

अफ सर ने आस्तीन से तह किया हुआ कागज निकालकर अध्यापक के सामने पेश किया। अपनी कलम भी बढ़ाई जो उसने कैम्प टी नम्बर दो में किसी से छीन ली थी।

ड्राइवर ने गाड़ी का पिछला दरवाज ा खोला।

"अगर हस्ताक्षर न करो तो तुम्हें यहाँ रहना पड़ेगा। और बच्चे अकेले जाएँगे।" अफ सर बोला, "तुम्हारी मर्जी।"

अध्यापक ने हस्ताक्षर किए।

"हो गया, दाढ़ी वाले। देखता हूँ कि अकेले रहना नहीं चाहते जब दूसरों के साथ कहीं और पहुँचने का अवसर मिले।" उसने सोचा अध्यापक की चिथड़े पहने सहायिका की कभी हँसी नहीं उड़ाएँगे कि चिर स्वयंवरा है। इनमें से किसी को घटिया नहीं कह सकेगा। थोड़ी देर बाद ये सब समुद्री परी बन जाएँगे।

हेनरिक ब्लेय ने अफ सर की बातों की अनसुनी की। हालाँकि फिर भी कहीं और जाती हुई राह की अब भी कुछ आशा थी, डरता था। यह अच्छा नहीं है, उसने सोचा। डर और भी बड़े डर का बाप है और इनसान को अपाहिज बनाता है। हाँ, डर से सावधानी भी पैदा होती है, ऐसा डर उपयोगी है यह भी सोचा।

जंगलों की ओर देखा जहाँ धुएँ के परदे में से धूप मुश्किल से झाँकती थी। उसने सोचा कि क्या-क्या राख बन चुका है। अगर इन जंगलों में आग लग जाती और सब कुछ जल जाता, तो नाम-निशान न रहता।

अफ सर ने बच्चों पर निगाह दौड़ाई। नाओमी पुराना कोट पहने काँप रही थी। हड्डियों की माला थी। कोट के नीचे नंगी थी। ऐसा दुबला प्राणी विरला ही मिलता है। हाँ, अध्यापक अभी इतना दुबला नहीं है। अब बूढ़ा इनको क्या बताएगा? शायद यह कि अब तक घास कोई नहीं मिटा पाया? चट्टानें नहीं ढलीं? समुद्र नहीं छना? फूल नहीं कुचले? चेहरा बनाता है जैसे सबसे गहरी खाई में उतरना हो, सीधे नरक में, अगर उड़ते हवाई जहाज से छलाँग लगाने का भी हुक्म मिले तो छलाँग लगाएगा, बस, ताकि इन हरामज ादों से बिछुड़ना न पड़े। लगता है कि भू-दृश्यावली से उसे दिलचस्पी नहीं रही। उसे तो खुशी होनी चाहिए कि अन्तिम बार बरफ का दृश्य मिल गया। क्या उसके लिए जो आज है वह कल भी होगा? किसके लिए, दाढ़ी वाले? अजीब सी सनक बूढ़े को है। चलती हवा की साँस सुनता है या किसी बुझी हुई ज्वालामुखी की आवाज ? क्या कौवों, बत्तखों, मुर्गियों की बातें सुनाई देती हैं? या मौसमी परिन्दों की? ये सब मौसमी परिन्दे हैं, अध्यापक और उसके छात्र। यह इनके नस-नस में है। हवाई प्राणी। शायद उनको बताता होगा कि पाप करने पर विवेकशील आदमी के दिल में कितना सूनापन होता है।

कड़ाके की सर्दी थी। जब कोई नहीं बोल रहा था तो केवल कुत्ते का गुर्राना और पेड़ों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। अफ सर उन्हें विदेशी जानवर जैसे देख रहा था। इस लड़की का चेहरा सौ साल की बुढ़िया जैसा लगता है। उसका कोट परदादा की उतरन होगा। कोट का किनारा टखनियों तक है। पाँव जूतों के बजाय चीथड़ों में लपेटे हैं। जिन आँतों में पिंडलियाँ लपेटी हैं वे निरोध बन सकते, हा हा हा, ताकि उसे रास्ते में संयोगवश गर्भ न रहे। अपनी उम्र में उसने ज रूर बहुत कुछ चखा था। हाँ उसका पेट नहीं फूल पाएगा। लगता है कि अभी अभी जागकर उठ गई या शायद रात की जागी है। बूढ़ा शायद नहीं जानता कि जो बलवानों का साथ देता है वह

बलवान होगा, जो दुर्बलों का साथ देता है वह दुर्बल होगा।

ड्राइवर ने दरवाज ा बन्द कर दिया। कमांडर साहब के बेटे ने देखा कि अन्दर से हैंडल नहीं है। गाड़ी के अन्दर दो घिसे हुए बेंच थे। ड्राइवर के पीछे छोटी सी खिड़की थी। इस पर जंगला था और फौलाद की जंजीरों का परदा था जो सिफ र्ड्राइवर के कैबिन से खोला या बन्द किया जा सकता था। एम्बुलेंस की कोई दूसरी खिड़की नहीं थी। दीवारें, फर्श और छत पर फौलाद के मोटे फलक लगाए हुए थे जैसे पुलिस वैन में होता है। इसलिए गाड़ी बहुत धीमे चलती थी और टैंक की तरह से शोर मचाती थी। घिसी-पिटी थी मानो कि कई बार भूमंडल का चक्कर लगा चुकी हो। फौलाद का बन्द डिब्बा था।

लड़के ने सोचा एम्बुलेंस बड़े फ्रि ज जैसी लगती है। युद्ध में कभी कभी मुर्दाघर का काम देती थी।

उसे निराशा हुई कि बच्चों ने अध्यापक का वही सिखाया गाना नहीं गाया जिसका उसे इन्तजार था। फिर भी उसके आँखों में चमक थी। विचित्र सफर की प्रतीक्षा थी। कहाँ से कहाँ तक रास्ता है? कहीं से नहीं तक। जीभ और होंठों से खेल रहा था। सच में उसकी जीभ मामूली से ज यादा लम्बी और चौड़ी थी। कभी कभी तुतलाया। खुश था कि बाप मौजूद नहीं है। बाप को ज रूर बुरा लगता।

अफ सर की बातें लड़के के दिमाग में गूँज रही थीं। अखिर उसके समझ में आया कि कहीं से नहीं कहीं नहीं तक जाने का क्या अर्थ है। रास्ते का लक्ष्य दलदल होना है? इसका क्या अर्थ है? बाप की बातों का क्या अर्थ है जब उसने कहा था कि कभी कभी सबसे बुरी बात सबसे अच्छी होनी है और सबसे अच्छी सबसे बुरी होनी है ताकि सब कुछ को नया अर्थ मिले, ताकि तीन और चार में कोई फ क र्न रहे? शायद दिन और रात में, चलती हवा और बन्द हवा में फ क र्मिटाया जा सकता है? उसने जीभ मुँह में खींचकर होंठ भींच लिए।

"मक्सहंस, इधर बैठो, आगे की सीट पर।" अफ सर ने कहा। कमांडर साहब का बेटा और कुत्ता कैबिन में आ गए। आगे की सीट पर अब तीन बैठे थे ड्राइवर, लड़का और अफ सर।

"अब चलो।" लड़के की तरह से जीभ निकाले कुत्ता ड्राइवर के पास लेट गया। उसकी भी बड़ी जीभ और बड़े सफेद दाँत थे।

ड्राइवर ने स्टार्ट किया। अफ सर खुश था। आज के लिए कमांडर साहब के लिए कंसर्ट तैयार किया गया था पहले 'मरनेवाले योद्धाओं का प्रवेश', फिर 'मेरे दोस्त', 'चिड़ियाँ गाती हैं' और 'आवारा'। क्रिसमस से पहले या इसके बाद शूबर्ट का 'आवे मरीया' बजाया था। सब सुनने वाले बहुत प्रभावित हुए।

'कुछ लोग कभी नहीं बदलेंगे', वह बोला, "उस बूढ़े से कितनी बार कहा कि

दाढ़ी घुटवाए और बाल कटवाए। अगर उसके हाथ बहुत ज यादा काँपते हैं तो वह लम्बे कोट वाली छोटी काली लड़की काट सकती थी।"

फिर आगे बोला : "इतनी सर्दी में बिना कपड़ों के सिफ र्कोट पहनना किसको अच्छा लग सकता है?"

और यह सोचा कि इन प्राणियों के साथ कितनी दुष्टता इस दुनिया से गुम हो जाएगी।

कमांडर के लड़के से कहा : "कुछ साल बाद तुम्हें सोचना नहीं पड़ेगा कि क्या करना चाहिए और क्यों। हम तुम्हें जल्द ही सब कुछ समझाएँगे। तुम जैसे लड़के को पता होना चाहिए कि शरीर के अंगों से क्या काम लेना है। क्या क्या होना चाहिए। देखता हूँ कि अब तुम पहले जैसे नहीं डरते।"

कमांडर साहब का लड़का 'विसंक्रमण' और 'स्थानांतरण' और 'जूआँ निवारण' शब्दों का अर्थ सोच रहा था। छावनी और कस्बे की सड़कों पर आलेख थे "एक जूँ तुम्हारी मौत।" उसका बाप क्या कहता था? "सबको अपना अपना चाहिए।" वह जंगली जानवर याद कर रहा था। हाथी किसी दूर जगह मरने चले जाते हैं। नम्बर तीन और चार। नम्बर क्यों मेल नहीं खाते? अपनी माँ को याद किया। बाप उसके ऊपर क्यों लेट जाता था?

लड़के के दिमाग में सारी दुनिया मँडरा रही थी। जो सुना था वह सब सोच रहा था। उसे बिच्छू याद आए जो नालों में, कोनों में, गैरजों में और मैले कपड़ों में छिपते हैं।

पिस्सुओं के बारे में सोचा। फिर मधुमक्खियों के बारे में जो आत्मरक्षा में डंक मारकर शरीर में विष डालती हैं। साँपों, मछलियों, परिन्दों, जूँओं के बारे में सोचा। फिर बाघों, शेरों और मगरमछों के बारे में सोचा जो आदमी को मार सकते हैं। सोचते सोचते चूहों तक पहुँचा।

चूहों की आबादी बड़ी तेजी से बढ़ती है। बाप कहता था कि चूहे लोगों का खाना खा जाते हैं, इसलिए खतरनाक हैं। बाप की निडरता के बारे में सोचा। और अन्त में मोटरों के बारे में।

"क्या सोच रहे हो?" अफ सर ने पूछा । अफ सर ने सोचा कि ऐसे व्यक्ति भी कम से कम नपुंसक तो बनाने चाहिए।

लड़के ने पूछा : "लोगों की संगति में जानवरों का क्या होता है?"

"क्या मतलब?"

लड़के ने जवाब नहीं दिया। सोच रहा था कि दलदल के किनारे पहुँचने पर क्या होगा। खयाल आया कि दलदल के पास आकर दलदल में घुल जाएँगे। क्या दलदल भी कुछ सोच सकती है? इस क्षण में भाँप गया कि दलदल क्या सोचती है।

जो बुलबुले मुर्दा तल से ऊपर सतह पर उठते हैं गहराई में फूटते तारे जैसे लगते हैं। उसने तीन बुलबुले गिने। तीन। चार नहीं। तीन।

उसकी आँखें दुबारा चमक गईं, उसे बुखार था और सरदी-जुकाम भी था। अगली बार जब बाप बताने लगेगा कि हाथी जंगल में अनजानी जगह कैसे मर जाते हैं और बाघ इनसानी माँस और खून के भूखे कैसे होते हैं तो विरोध करूँगा। नहीं, इनसान को दलदल मार डालती है। मोटरें। तिरपाल से ढँकी हुई लारियाँ। बिना खिड़की के एम्बुलेंस। बिना परों के पक्षी। या पंख वाली मछलियाँ।

"क्या सच है कि इनको आत्मा खाने वाली कहते हैं?" अचानक लड़के ने पूछा।

"यह हमें बताते हो या पूछते हो?" अफ सर ने पूछा।

लड़के को कहाँ से पता चला? एक जवान अनुसन्धानकर्ता ने ऐसी एम्बुलेंस का आविष्कर किया था, जिसकी मोटर जहरीली गैस बाहर नहीं निकालती, बल्कि अन्दर खींचती है। लेकिन खून, लार, मलमूत्र से लिपटे हुए मरे हुए इनसानी जानवर देखना कोई अच्छा दृश्य नहीं था। उनके चेहरे कितने विकृत होते हैं। इसलिए ड्राइवरों को दूसरा तरीका सिखाना पड़ा। धीरे धीरे, रफ्ता रफ्ता कैदियों को गैस से बेहोश करना और फिर गैस से उनकी साँस बन्द करना। इसी क्रम से।

लड़के ने जवाब नहीं दिया। अफ सर को खयाल आया कि लड़के की जरा परख करने के लिए चार दिशाएँ और मूलतत्त्व पूछे।

"कब पहुँचेंगे?" कमांडर के बेटे ने पूछा।

"बीस पच्चीस मिनट तक।" ओबर्ग ने जवाब दिया।

"कहाँ।" लड़के ने पूछा।

"वहाँ," अफस ने जवाब दिया।

"वहाँ कहीं नहीं।" लड़के ने दुहराया।

"हाँ, ऐसा भी कहा जा सकता है।"

लड़का अचानक समझ गया, मानो कि लम्बी नींद से जाग गया हो। सब कुछ समझ गया यह भी कि अन्दर बच्चों और अध्यापक का क्या हाल है।

दलदल का रहस्य। मोटरों का भेद। जानवरों का भेद, जिनको आदमी सिफ ं इसलिए मार डालता है कि जानवर हैं इनसानी जानवर हैं। मुड़ के छोटी खिड़की की ओर देखा। जीभ से खेल रहा था। एक दो तीन, एक और चार।

अस्तबलों, भंडारों, कुत्ताघरों के पास से गुज रे। दलदल के पास पहुँचे जहाँ कैम्प का किनारा था। गाड़ी से कोई धुआँ नहीं निकल रहा था।

"अभी अपने स्वर्ग से नहीं निकले।" ओबर्ग ने ड्राइवर से कहा, "पूरी गैस पर चलाते हो?"

"बिलकुल।" ड्राइवर ने जवाब दिया।

"ज यादा तेज चलाओ।"

"ज यादा तेज नहीं चला सकता।" ड्राइवर ने कहा।

ओबर्ग ने सब दाँत दिखाए। कमांडर साहब के बेटे ने उसकी ओर देखा। एक दूसरे को समझते थे। सब ठीक-ठाक चला।

"ठीक है।" अफ सर ने कहा। "दुनिया ठीक जगह है। तरीका मालूम है। सब को अपना अपना, एक जूँ तुम्हारी मौत। हम जर्मन जानते हैं। मरने के लिए पैदा हुए। लेकिन दूसरों से पहले नहीं मरेंगे।" मन ही मन भाँप रहा था दलदल अब कितनी दूर है।

"क्या तुम मर्द हो?" अफ सर ने पूछा, "मेरा तो खयाल है कि मर्द हो।"

"मर्द आप हैं।" लड़के ने जवाब देकर अफ सर को अपनी नीली आँखों से देखा। उसकी आँखें अब धुँधले तारों जैसी थीं, फरिश्तों की घंटियों जैसी। उसका चेहरा गुलाबी पड़ गया।

"क्या तुमने सुना कि कुछ लोग राजहंस का खून पीते हैं?"

लड़के ने मुँह खोला।

"जरा जल्दी करना है।" अफ सर बोला।

"यहाँ इतनी तेजी से ड्राइव नहीं कर सकते।"

ओबर्ग ने रोशनी जलाकर मुड़कर पीछे देखा। एक सेकंड में रोशनी बुझा दी।

कमांडर का लड़का बोला : ऐसा लगता है कि खाँसते हैं।

"हाँ, खाँसते हैं। सर्दी है।" अफ सर ने हामी भरी, "बाहर शून्य से नीचे पन्द्रह डिग्री है और हवा तेज है।"

"हाँ।" ड्राइवर ने हामी भरी।

"लेकिन वसन्त आनेवाला है।" ओबर्ग ने घोषणा की, "हवा में वसन्त है।"

"हाँ, ऐसा तो लगता है।" ड्राइवर सहमत हुआ।

"बहुत दिनों से इन्तजार है।" अफ सर बोला, "आशा है कि अबाबीलें आएँगी। अभी तो बस बहुत कव्वे हैं।"

"वसन्त में बोरियत है।" ड्राइवर बोला, "बोरियत से थक जाता हूँ।"

"यह तो ठीक है। यहाँ कुछ भी नहीं उगता, बहुत ज यादा फौजें इधर से गुज री हैं।" अफ सर ने समझाया।

थोड़ी देर तक अन्दर की आवाज ें सुनते रहे। फिर अफ सर ने लड़के से पूछा, "क्या तुम्हें वसन्त पसन्द है ?"

"मैं इस समय उनके साथ होता तो अच्छा होता।" लड़के ने जवाब दिया।

"कहाँ?"

"वहाँ", कमांडर के बेटे ने जवाब दिया।

अफ सर समझ गया।

लड़के का पसीना निकला। आँखों से आँसू बहने लगे। उसका चेहरा हँसता सा लगा, लेकिन वह हँसा नहीं। मुड़ के देखने का साहस नहीं पड़ा, फिर भी मन ही मन आँखों के सामने सब कुछ था। उसकी आँखों में दूरी और शून्यता थी। कैम्प में पहले सुना हुआ दूरियों, बड़ी आशा और सबसे लम्बी रेलगाड़ी का गाना दिमाग में गूँज रहा था। अनजाने झंडे का गाना गूँज रहा था। कहीं से कहीं नहीं भागने का, हवा में काँपती हुई आत्मा का, अन्तहीन दूरी तक जाती हुई रेलगाड़ी का गाना।

"अभी नहीं?" अफ सर ने कहा।

"जो हुक्म, साहब।" ड्राइवर बोला।

दलदल तक पहुँचे। गाड़ी झकोरे खा रही थी।

अफ सर ओबर्ग उँगलियों से "मरनेवाले योद्धाओं के प्रवेश" पर ताल देने लगा।

10

ड्राइवर ने उत्तोलक से गैस का रास्ता बदल दिया। तब हेनरिक ब्लेय की बातें और विचार कट गए, जैसे धागा कट जाता है। बच्चों ने नाक और मुँह पर चिथड़े दबाए। इसके लिए भी अध्यापक ने उनको तैयार किया था। जानते थे कि यह कोई खेल नहीं है।

तब कमांडर के लड़के को पीछे से कुछ आवाज ें सुनाई दीं। ऐसा लगा मानो कि आलू के बोरे फर्श पर गिर रहे हों या अन्दर कोई मार-पीट चल रही हो। विचार आया कि वे ट्यूब बूढ़े बीमार हाथियों के सूँड जैसे लगते हैं। लड़के के माथे पर पसीने की बूँदें निकलीं। उसकी जीभ सुन्न हो गई।

तब अन्दर लोगों की साँस घुटने लगी। अध्यापक के जहन से काले बालों वाली सुन्दर रानी, महल के ठाठ के चित्र पिघल गए। सब कुछ गया। हेनरिक ब्लेय ने अपने चारों ओर शून्यता और त्रास महसूस किया, लेकिन राहत भी और थकान भी, जो शायद मरने वाले तारों को होती है। बुझता हुआ सूरज। बुझता हुआ ज्वालामुखी। चारों ओर अँधेरा छा गया। सब अँधेरे में डूब रहे थे। उसे मालूम था कि यह अन्त है। बेचैनी और सन्त्रास, आत्मा का सन्त्रास, दुख और निराशा, सब कुछ अगले क्षण में शून्यता में डूब जाएगा, जहाँ से वापसी नहीं है। असह्यता खत्म हो रही है। उसे केवल इसका दुख था कि यहाँ अकेला नहीं है। खाँसता था, दम घुट रहा था और साथ ही इच्छा थी कि यह सब जल्दी हो जाए। इसके लिए तैयारी नहीं थी। कोई भी तैयारी नहीं हो सकी। अपनी खाँसी और सब दूसरों की खाँसी सुनी। चीखना-चिल्लाना सुना बहरे-गूँगे लड़के का भी और अन्धी लड़की का भी। निमिष मात्र, शायद अन्तता का भाग। नाओमी का माथा उसके माथे से टकराया। लड़की के नाखून

उसकी बाँह में गड़ गए, दूसरी तरफ से अन्धी लड़की के नाखून। अब कुछ नहीं बोल सका। उसके सिर पर आ पड़ी।

हालाँकि बच्चों को न चिल्लाने, न टूटने का आदेश दिया था, अब वह भी चिल्लाने लगा, दम तोड़ने लगा। आखिर में खून उगलने लगा। जान तमाम। अब उसे अपनी पड़ी थी। चेतना का अन्तिम क्षण था। कितना अकेला है। सब कितने अकेले हैं। वह बहुतों में एक है। ऐंठन में दाँतों से अपना अँगूठा काट गया, तब मुँह बन्द हुआ। इतना दर्द कभी नहीं हुआ था। उसका चेहरा विकृत हुआ। अँधेरा सब कुछ निगल गया।

दलदल में मेंढक बोल रहे थे। जोर से बोल रहे थे, शायद हजारों मेंढक।

एम्बुलेंस ठीक जगह पहुँची, फाटक पर आलेख था : "अगल साल जेरुज लेम में।"

11

कमांडर साहब का लड़का कान लगाकर सुन रहा था, क्या पीछे से और कोई आवाज आएगी या नहीं। नहीं आई। वह जीभ से खेल रहा था। मन ही मन दुहरा रहा था

उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और पृथ्वी, जल, आग और हवा।

अफ सर बोला : "काम हो गया। पेट भर गया उनका।"

"अब उनको उँडेल देना है।" ड्राइवर बोला।

अफ सर बोला : "देर न करो।"

"उम्मीद है देर नहीं लगेगी।"

"मैं बहुत देर तक रुकना नहीं चाहता।" अफ सर बोला।

"कोई पाँच मिनट तो लगेंगे।" ड्राइवर ने कहा, "अकेला हूँ।"

"पाँच मिनट ठीक है।"

"देरी नहीं होगी।"

"शाम को कंसर्ट है।" ओबर्ग बोला।

उधर ड्राइवर लाशें गाड़ी से उँडेल रहा था। यह उसका फौजी फ ज था, इधर लड़का और ओबर्ग कैबिन छोड़कर दलदल के दूर किनारे तक चले गए, जहाँ दलदल भूमि पानी से जुड़ी थी। बातें नहीं हुईं। आसमान बहुत ऊपर था। चाँद चमक रहा था। चारों तरफ सन्नाटा। हवा बन्द थी। सब फौजी दफ्तर यहाँ से दूर थे।

आखिर शरीर और सिर मुर्दा मुर्गियों की तरह सतह के नीचे डूब गए। ड्राइवर ने मलमूत्र और खून गाड़ी के फ र्श से कई बालटियाँ पानी डालकर बहा दिया।

जब तक ड्राइवर भार उतार रहा था तब तक दलदल में मेंढक खामोश रहे। अब दुबारा जोर से बोलने लगे। दलदल से अजीब खास दुर्गन्ध आ रही थी। बासी घनीभूत

खून जैसी। इसमें लाशों की दुर्गन्ध डूब जाती थी। सिफ ं बलबुले ऊपर उठते थे।

ड्राइवर ने आवाज दी : "हो गया, तैयार है।"

"हाँ अभी आते हैं।" अफ सर ने जवाब दिया।

पानी में पत्थर फेंक दिया, पत्थर डूबते ही सतह पर छल्ले फैल गए। लड़के की आँखें धुँधली सी पड़ गईं।

"देख रहे हो?" अफ सर ने पूछा

"क्या?"

"पानी की सतह पर छल्ले।"

"हाँ।"

"अब भी?"

"हाँ, जो सबसे चौड़े हैं देखता हूँ।''

"अब भी?"

"जी हाँ।"

"क्या अब भी नज र आ रहे हैं?"

"कुछ कुछ।"

"अब भी?"

"नहीं।"

"लो। यह हुई न बात।"

"क्या?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ नहीं?" लड़के ने दुहराया।

"वही जो अभी अभी हो गया है।"

"क्या?"

"कुछ नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"यह अच्छे और बुरे का फ क ं है।" अफ सर ओबर्ग ने जवाब दिया। जो देखना नहीं चाहते वह दिखाई नहीं देता। समझ में आई बात? पत्थर पानी में फेंक दिया। वह सतह पर नहीं रहेगा। पत्थर फेंक दिया, पानी की सतह पर छल्ले नज र आएँगे, फैल जाएँगे और गुम हो जाएँगे। और अब फ ज ं करो कि कोहरा है। कोहरा। धुँधलाने का मतलब क्या है, समझते हो? धुँधलाना और रात। रात और कोहरा। भाई बहन।"

"नहीं समझता।" लड़के ने कहा।

"थोड़ी देर में पता चलेगा।" अफ सर बोला।

लड़के के चेहरे के भाव से पता चल रहा था कि उसे मालूम है उसका क्या होगा।

"थोड़ी देर, क्या मतलब?"

अफ सर ने लड़के को नहीं बताया। कमांडर साहब ने भी नहीं बताया था।

लड़के से कहा : "तुमने देखा है। वे बस इनसानी जानवर हैं जैसे तुम्हारे पिता कहते हैं। बस इनसानी जानवर, सूअरी कुत्ते। जब मूलतत्त्व सीखोगे तो जानोगे कि चार मूलतत्त्वों के सिवा पाँचवाँ मूल तत्त्व हम हैं।" मुस्कराकर आगे बोला, "हजार साल का साम्राज्य। रक्त और भूमि। जर्मन इज्ज त और रक्त की रक्षा के कानून। नस्ल की शुद्धता, अकलंकिता।" सूअर के चमड़े के अपने पीले दस्ताने पहन लिए, मानो अब कुछ भी छूना न चाहता हो।

दलदल पर बार बार राख गिर जाती थी। इसके काले कमलों के जैसे छोटे द्वीप बन जाते थे।

"क्या, गलत है?" अफ सर ने पूछा, "नहीं, सब बिलकुल ठीक है।"

ड्राइवर ने एम्बुलेंस का चक्कर लगाया। कैबिन में बैठकर मोटर स्टार्ट की। ट्यूब से निकले धुएँ से आसपास की हवा खराब, जहरीली हुई। कुत्ता काँप रहा था। पहले तीनों को ताक रहा था, फिर केवल कमांडर के बेटे को।

लड़के की आँखों में चमक थी, जो मानो कि उसके माथे पर रोशनी डाल रही हो। सूरज, वसन्त, आग की याद दिलाती थी। या जल की। जलती हुई जमीन की। अब दिन के उजाले में दलदल का रंग हलका सा पड़ गया, जमी हुई राख की कई परतों के द्वीपों पर भी रोशनी सी पड़ी। लड़का पसीना पसीना हो गया। मोटर की आवाज से उसे पहले सुना हुआ गाना याद आया। उसे लगा कि अब भी सुनाई दे रहा हो, हालाँकि शब्द याद नहीं थे। मोटर की आवाज उसे अच्छी लगी। दोनों गाड़ी के पास आए।

"अन्दर पीछे बैठोगे?" अफ सर ने लड़के से पूछा।

"बड़ी खुशी से।" लड़के ने जवाब दिया।

"तो बैठ जाओ।"

"धन्यवाद।" लड़का बोला।

ओबर्ग ने ठिप्पणी की :

"कड़ी मेहनत आज ादी देगी, तो नम्बर तीन गुम हो जाएगी।"

लड़के को ऐसा लगा मानो कि बाप यहाँ हो, उसकी आँखें दिखाई दीं, उसकी आवाज सुनाई दी। एम्बुलेंस का बिना हैंडल का दरवाज ा अभी खुला था। मेंढकों ने दलदल पर दुबारा कब्जा कर लिया। हजारों मेंढक, छोटे बड़े स्वस्थ मेंढक। जोर से बोलने लगे, कुछ और सुनाई नहीं देता था।

"सब कुछ स्वस्थ जर्मन परिवार के लिए।" अफ सर बोला, "दरवाज ा बन्द कर दूँ?"

"हाँ।" लड़के ने हामी भरी।

ओबर्ग खाँसने लगा। गाड़ी का दरवाज ा बन्द करके ड्राइवर से बोला : "मैंने यहूदी अन्त्येष्टि गीत का नया मार्च रचा, जैसे पिछली बार जिप्सी शादी के गानों का अन्त्येष्टि गान बनाया था। उलटा-पुलटा करने से इसका अर्थ निकलता है। फिर डेंटिस्ट के पास जाना है। उसका नम्बर शायद चौंतीस है।"

"ठीक है। क्या नई मोटर मिली?"

"हाँ, लेकिन शायद एकदम नई नहीं है।"

ड्राइवर ने सोचा कि क्षीणबुद्धि लड़के को मूलतत्त्व के उलझन में डालना बेकार था । सब तो जानते हैं कि वह दिशाओं में भी फ क ँ नहीं कर पाता। सोचता था कि दिशाएँ पहचानने से यह जानना अच्छा है कि मरने वाले हाथी कैसे गुम हो जाते हैं। और बाघ लोगों को क्यों पकड़ते हैं। लोग बाघों का शिकार क्यों न करें।

तीन आदमी दो आगे, एक पीछे, तेजी से वापस जा रहे थे। गाड़ी अब हलकी थी, जवान घोड़े की तरह कूद रही थी। चटकीले फौजी रंग के तीन लाल क्रूस निष्कपट लगते थे। गैस निकालने के नालों से छोटे बादल निकलते थे। पेट्रोल का घना धुआँ था। ताजा हवा में घुलने में कुछ देर लगती थी, क्योंकि हवा बन्द थी। कुछ देर बाद धुआँ निकलना बन्द हुआ और हवा साफ हुई। कुत्ता धीमे से गुर्रा रहा था।

तीन समुद्रों के बीच के बियाबान के बीच में विशाल मैदान चारों दिशाओं में फैलता है। ठंड से अकड़े ठोस बने हुए मकड़ीजाल जैसा फैला हुआ है। कब्जे में लिया हुआ देश, द्वीप। जिसके किनारों के पास कोई जहाज नहीं आता, पत्रहीन जंगलों में डूबा हुआ, यूरोप और दुनिया में खोया हुआ।

सर्दी है, जाड़े के अन्त और वसन्त के आरम्भ का एक शान्त दिन। ईस्टर सोमवार। खाली बालियों और बर्फ पर राख गिरती है। दोपहर को बर्फ पिघलती है। बहुत ऊपर, परती जमीन के ऊपर कौवे बोल रहे हैं। काले कौवे सूरज को ढँक रहे हैं।

चार दिन और चार रातों से कालिख से भरे हुए काले धुएँ के थक्के तैर रहे हैं। हवा बन्द है।

5.5.1945, प्राग

(एक नागरिक की डायरी में से)
(पुस्तक 'एक प्रतिक्रान्तिकारी की डायरी' का एक अध्याय)

पावेल कोहोऊत

इस दिन की रात को तुम्हें लिख रहा हूँ जिसमें मुझे सब कुछ मिला : आज ादी और तुम।

तुम्हारे पलँग के पास बैठा तुम्हें सोते देख रहा हूँ। गोलियाँ चलने की प्रतिध्वनि से भी तुम्हारी नींद नहीं टूटती। तुम साही जैसे सिकुड़ी हुई सो रही हो। साही काँटों से सुरक्षित है, तुम मोर्चाबन्दी से।

मुझे लगता है कि यह सब कुछ बरसों पहले हुआ था, लेकिन यह तो आज सुबह ही हो गया कि माँ ने मुझे बड़ी खुशखबरी बताकर जगा दिया।

"रेडियो का प्रसारण आज सिफ ँ चेक में हुआ है।" माँ को मालूम था कि मुझे आज रेडियो स्टेशन जाना है। "तुम्हें जाना नहीं चाहिए। अगर क्रान्ति शुरू हो जाए तो?"

गनीमत से पिता जी समझ गए। ''तुम जल्द ही सत्रह के होगे। मुझे तुम्हारी अक ल का भरोसा है।"

स्टूडियो छः के सामने तीन दोस्त खड़े थे रोबर्ट, पेत्र और स्लावेक। खन्दक खोदने के बेगार से भाग गए। एक दूसरे को समाचार बता रहे थे, बहस कर रहे थे कि क्या प्राग में विद्रोह होना चाहिए या नहीं। रोबर्ट का कहना था कि बेकार खूनखराबा होगा। मैं, पेत्र और स्लावेक सहमत नहीं थे। हम सब लोग बहुत अरसे से घुटने टेके जीते रहे। आज ादी उपहार जैसे नहीं लेनी चाहिए। अगर कौम आज ादी के योग्य है तो आज ादी लड़कर लेनी है। रोबर्ट ने ऐसी बात कही जो हमें बहुत ज यादा बुरी लगी : "आज ादी के योग्य होने के लिए जि न्दा रहना चाहिए।"

''सब को जान से नहीं मार सकते", मैंने कहा, "जो जीवित रहेंगे उनको मरने वालों के खून से शक्ति मिलेगी। इस्तिरी किए हुए झंडे घर बैठने वालों के लिए ठीक हैं। कौम के झंडे कौम की इच्छाशक्ति का आईना हैं। और कौम की इच्छा तो सत्य की रक्षा करना है।"

हमारे पास से जरमन गार्ड गुज रे। दो हम से कुछ बड़े लड़के थे। उनके पतलून और कनटोप ढीले थे। बरसों से रेडिया स्टेशन की रक्षा कुछ बूढ़े आस्ट्रियन करते

थे, जिनको सब लोग जानते थे। सुनने में आया था कि उन लोगों ने हथियार डालने का वायदा किया अगर बदले में उनको अपने अपने घर भाग जाने देंगे। लेकिन अब वे नहीं थे। उनकी जगह ये लड़के आए।

हमारे पास रुक गए, एक बिलकुल पास, दूसरा जरा दूर।

''पहचान-पत्र!''

हमने जर्मन पुष्टिपत्र दिखाए कि हम रेडियो नवयुवक गायक वृंद के सदस्य हैं।

"Wo is der Ansagerraum?"[1]

''पता नहीं।'' पेत्र ने चेक में कहा।

पहले लड़के ने खीस निपोरी। गाली देकर उसने बन्दूक से धमकी दी, रोब को एक ओर धकेलकर दोनों आगे चले। हम तो उनके गले पकड़ सकते। खेद है कि सिफ ़ मन ही मन ऐसा किया। तब तो हम अग्रदूत बन सकते फिर तुम्हारी एड़ियों की आहट सुनाई दी और मैं तुम्हारे अलावा सब कुछ भूल गया।

तुमने बताया कि माता-पिता किसी के अन्तिम क्रियाकर्म में बाहर चले गए और तुम शाम को सिनेमा देखने चल सकोगी। छः बजे मिलने का तय हुआ। हम सिफ ़ दो अकेले नहीं जा पाएँगे। इसका मुझे अफसोस हुआ। किसको मालूम हो सकता था कि हमारे लिए किस्मत का क्या बदा है? सौभाग्य? दुर्भाग्य ?

दस बजे के बाद हमारा प्रोग्राम समाप्त हुआ। मुख्य भूमिका हमेशा की तरह स्लावेक की थी, ईर्ष्या उससे नहीं हुई। तुम तो हो। गलियारों में पेचकस लिए सम्पादक, तकनीक, अदाकार इधर-उधर घूम रहे थे। सब जगह जर्मन तख्तियाँ हटाई जा रही थीं। हमने मदद की। यह विनोदी विद्रोह था। किसको मालूम था कि जल्द ही उसका क्या मूल्य चुकाना पड़ेगा।

तुम्हें घर छोड़कर हम ट्राम से अपने अपने घर गए। कंडक्टर ने किसी जर्मन विमानचालक को सूचित किया कि जर्मन मुद्रा अब नहीं लेता। चूँकि जर्मन के पास चेक क्राउन नहीं थे तो कंडक्टर ने ट्राम रुकवाकर जर्मन को उतरवा दिया। फिर पागल जैसा घंटी बजाने लगा। "चेक लोग मुफ्त में चलेंगे।"

हमने गाना शुरू किया। सब सवारियों ने साथ दिया। शो-केसों के सामने भीड़ थी। दुकानदार जर्मन नामपट हटा रहे थे। जब मैं उतर रहा था तो रोब ने कहा : ''अच्छा छः बजे।''

ट्राम के स्टेशन पर ओवरसियर बोतल हाथ में लिए खड़ा चिल्ला रहा था : ''युद्ध के बाद शाम के छः बजे! शाम के छः बजे आज ाद रेपब्लिक में!''

जर्मन लोग गुम हो गए। हिटलर-चौक पर टीन की तख्तियाँ दीवारों पर से गिर रही थीं। जनरल अमला की बिल्डिंग की ओर बड़ा झंडा उठाए बड़ी भीड़ बढ़ रही

1. यहाँ उद्घोषक का कमरा कहाँ है?

थी। राष्ट्रगीत गा रहे थे। मुझे सन् 1938 के सितम्बर की एक रात याद आ गई। तब मैं दस साल का था और बाप का हाथ पकड़े था। जब हमारे काने सेनापति ने कौम को म्यूनिख वाली पराजय की घोषणा दी थी, तब पहली बार पिता को रोते देखा था। तब भी राष्ट्रगीत गाया गया था। इन दो राष्ट्रगीतों के बीच कितनी जानें गई थीं, कितने आँसू बहे थे।

घर पर अभी कोई नहीं था। मैंने रेडियो खोला। छः साल बाद ''बाज ी''[1] मार्च प्रसारित हो रहे थे। बहुत खुश होकर मैंने रेडियो पूरे जोर से खोलकर खिड़की में रख दिया। यह खयाल शायद हवा में फैल गया। एक क्षण में सारी सड़क गूँज उठी। लोग हाथ हिलाते थे और खिड़कियों से छोटे लाल-नीले-सफेद झंडों की मालाएँ लटका रहे थे। अचानक रेडियो में मार्च की तान बन्द हो गई, बन्दूकों की आवाज और चीख-चिल्लाहट सुनाई दी।

"चेक पुलिस और चेक सेना को बुलाते हैं, हमें मदद चाहिए, जर्मन यहाँ हमारे लोगों को मार रहे हैं।"

मैंने सिफ ़ परचे पर लिख दिया चिन्ता न करो, मैं ठीक हूँ।

फिर इस साल के दौरान मैं दूसरी बार शहर के तुम्हारे हिस्से में समय से होड़ दौड़ा। भीड़ तितर-बितर हो गई थी। ट्राम चलनी बन्द हो गई थी। दुकानें बन्द हो रही थीं। कुछ लोग मेरी दिशा में तेजी से चल रहे थे। पास से हथियारबन्द लोगों से खचाखच भरी हुई लारी गुज री। इसमें खड़े हुए आदमी कनटोप लगाए हुए थे। पायदान पर चेकोस्लोवक अफ सर खड़ा था। छः साल से मैंने यह वर्दी नहीं देखी थी। वर्दी उसके तंग थी, बटन खुले हुए थे। लारी नहीं रुकी।

वेंसेस्लव स्क्वेर पर जर्मन गोलियाँ चला रहे थे। मार्ग सेतु से भी वहाँ पहुँचना असम्भव था। आखिर बड़े रेलवे स्टेशन की पटरियाँ पार करके वहाँ पहुँच पाया।

रेडियो स्टेशन के पास काम लगभग तमाम हुआ था। सामने वाले घर के गलियारे में मुर्दे लेटे थे। उनके चेहरों पर टोपियाँ रखी हुई थीं।

जब जर्मनों को उद्घोषक का कमरा नहीं मिला था तो गोली चलाने लगे। उद्घोषक का कमरा इसलिए नहीं मिला था क्योंकि सुबह हमने तख्तियाँ हटा दी थीं। हमारे लोग छतों पर से अन्दर घुस गए। इसी मंजिल के लिए लड़ाई हुई। गैरिसन के बाकी जर्मन तहखाने में छिप गए।

अब अग्निशमन कर्मचारी उनको दमकल से निकलवा रहे थे। यह तरकीब उन्हीं लोगों ने खुद हमें सिखाई थी, जब पुराने गिरजे के तहखाने से वहाँ छिपे हुए हमारे छातासैनिकों को निकलवा रहे थे, जिन्होंने राज्य संरक्षक हायद्रिख को मौत की सजा दी थी। मेरे पिता आज तो खोलकर कह सकता हूँ उनको तहखाने में खाना

1. ''बाज '' व्यायाम-सम्बन्धी लेकिन बहुत देशभक्त संगठन, जर्मन आधिपत्य में निषिध।

पहुँचाते थे।

रेडियो बिल्डिंग में बारूद की गन्ध थी। हाल में भी लाशें लेटी थीं। अपनी उम्र के लिहाज से मैं बहुत लाशें देख चुका था। लेकिन इसकी आदत कभी नहीं पड़ सकती। एक कोने में हमारे मुर्दों की पंक्ति लेटी थी। दूसरे कोने में जर्मनों का ढेर था, धूसर लट्ठे से लगते थे। बूटों की पंक्ति, सिरों की पंक्ति। मुझे वे दो जवान फौजी याद आ गए जो अभी शायद हम जैसे पढ़ने वाले थे। यह सोचकर कि शायद इस ढेर में वे भी पड़े हैं मैं काँप गया। लेकिन सहानुभूति नहीं हुई। सहानुभूति नहीं।

जब पादरी पेत्रेक हायद्रिख की हत्या से एक दिन पहले आखरी बार हमारे घर आए थे तो मेरे पिता ने जर्मन अपराध और सजा की बात की। बोले : "जब युद्ध के बाद मुझे रास्ते में कोई जर्मन मिले तो उससे कहूँगा हट बे जर्मन, इनसान चल रहा है।"

वह वैरागी विद्वान पादरी जिनकी शक्ल जीसस से मिलती-जुलती थी, रोज उस भूमिस्थ कक्ष का भारी ढक्कन हटाकर छातासैनिकों का खाना ले आते थे और उनका मल ले जाते थे हाँ, वीरता ऐसी भी हो सकती है। जीसस से जो विश्वासघात हुआ था ऐसा उनके साथ भी हुआ। जीसस को जो पीड़ा पहुँचाई गई थी उनको भी पहुँचाई गई, जीसस की तरह वे भी मार डाले गए। उनको याद करके उन जरमनों से सहानुभूति अपने से दूर भगाता हूँ। अपने मार डाले हुए चचा का बदला लेना है, नज रबन्दी कैम्पों में मरने वालों का बदला लेना है, अपने और तुम्हारे छः साल के नैराश्य का बदला लेना है।

हाल काँपने लगा। तहखाने में दस्ती गोले फूटने लगे। मैं कोई हथियार ढूँढ़ने लगा लेकिन ये केवल भूतपूर्व फौजियों को मिलते थे। फिर कार्ल जी मिल गए।

"मेरे साथ चलो।" फुसफुसाये, "तुम्हारे लिए कुछ है।"

वह मुझे पसन्द करते थे। मुझे भंडार में ले गए। वहाँ जर्मन कनटोपों, पेटियों, गेज नकाबों आदि का ढेर था।

विजयी लहज ` में बोले : "यह सब कुछ तितर-बितर हो जाता, लेकिन हमें थिएटर भी सोचना है। युद्ध के नाटकों में काम आ जाएगा।"

मैंने कनटोप, पेटी और संगीन चुन लीं। इस समय ये चीजें तुम्हारे पलँग पर पड़ी हुई हैं। तुमसे मिलने दौड़ा। सड़कों पर भीड़ थी। मोर्चाबन्दी बनने लगी। हमारे सिनेमाघर के पास ही ट्राम का डिब्बा उलटा जा रहा था। तुम डर गईं।

"पेत्र कहाँ है? और दूसरे लड़के?"

"शायद इधर नहीं पहुँच पाए। मैं तो अन्तिम क्षण में पहुँच गया।"

"मैं माँ-बाप को लेकर परेशान हूँ। रेलगाड़ी अब बिलकुल नहीं चलती। हम घेराबन्दी में हैं।"

"अमरीकी पिलसन में हैं। सुबह तक प्राग पहुँचेंगे।"

फिर हम लोगों ने तीन घंटे के लिए इनसानी जंजीर बनाई। पत्थर की टाइलें हाथों हाथ आगे जा रही थीं। वही टाइलें जिन पर तुमने घर छोड़ते समय कितनी बार कदम रखा था। मुझे पहले पता नहीं था कि सड़क का वजन कुल मिलाकर कितना है। पानी बरसने लगा। तुम्हारे चेहरे पर पानी बहने लगा। फिर भी तुमने बरदाश्त कर लिया। तुम्हें जानना चाहिए मैं कितना खुश था और तुम पर कितना गर्व था।

मैंने तुममें जीवित वीरांगना जॉन द'अर्क देखी और यह वीराँगना मेरी प्रियतमा थी।

हम तुम्हारे घर तक पहुँचे। सब दिशाओं से गोली चलने की आवाज आ रही थी। शहर के दूसरे सिरे पर बारिश से मिली हुई धुन्ध में पटाखे फट रहे थे। तुम्हारे दिमाग में वही खयाल आया जो मेरे दिमाग में।

"अब कहाँ जाओगे? घर तो नहीं पहुँच पाओगे।"

"पता नहीं," मेरा दिल दहल रहा था।

फिर तुमने कहा : "तुम हमारे घर में किचन में सो सकते हो। तुम्हारे लिए बिस्तर बिछाऊँगी।"

कुकर और खाने की मेज के बीच रखे हुए काउच के तकियों पर कपड़े पहने बैठ गया। गुसलखाने से बहते पानी की आवाज सुनाई दे रही थी। तुम गाउन पहने गुसलखाने से निकलीं। गाउन के नीचे से पतलून नज र आ रही थी। मैंने तुमसे कहा कि जोकर जैसी लगती हो। तुम हँस पड़ीं। नए अपनेपन ने हमें जोड़ दिया।

तुम ने पूछा : "सोते क्यों नहीं?"

"मेरी एक ही इच्छा है। सो जाने से पहले अपने पास बैठे रहने दो और अपना हाथ पकड़े रहने दो। वायदा करता हूँ कि और कुछ नहीं करूँगा।"

तो दूसरी बार उस कमरे में आया। पहली बार तीन महीने पहले आया था, तब पहला चुम्बन हुआ। अब खिड़कियों पर ब्लैक आउट था। मेज की लैम्प की रोशनी में कमरा बदला हुआ लगा। तुम भी तकिए पर सिर रखे बदली हुई लगीं। मैंने पेटी, कनटोप और संगीन अलग रखे, लेकिन युद्ध फिर भी हमारे साथ रहा। रेडियो से पुराने फौजी मार्च बज रहे थे। यह संघर्ष करती हुई कौम की संकेत धुन थी। बीच बीच में चेतावनी सुनाई दी कि जर्मन टैंक प्राग आ रहे हैं।

हम हाथ पकड़े बैठे रहे। बहुत देर तक। फिर मैं पागल हो गया।

"सुनो, मैं दो से प्रेम करता हूँ। तुमसे और रेपब्लिक से। तुम्हारे पास बैठा हूँ, रिपब्लिक के लिए लड़ने अभी जाऊँगा। जब भगवान ने यह शाम प्रदान की तो मुझे अपने दिल पर हाथ रखने दो। शपथ लेता हूँ कि कुछ और नहीं चाहता। सिफ ` गर्मी का दान चाहिए जो मुट्ठी में अपने साथ ले जाऊँ।"

तुम निश्चेष्ट लेटी रहीं। मुझे निराशा हुई। उठकर जल्दी चले जाने के सिवा कोई चारा नहीं रहा। तब तुम्हारी आवाज सुनाई दी।

''रोशनी बुझा दो।"

मान गया। मुझे अचानक बहुत गर्मी लगी। कपड़े की सरसराहट सुनाई दी। दो बाँहों ने मुझे कसकर अपनी ओर खींच लिया। मैंने तुम्हारे गर्म सीने पर हथेलियाँ रखीं। तुम से लिपट गया। मुझे लगा कि बेहोशी आ रही है। तब तुम्हारी आवाज सुनाई दी।

''क्या तुम कभी किसी के साथ...''

''नहीं। और तुम...?

"मैं भी नहीं। तो आओ, हम..."

एक क्षण के लिए दम अटक गया। आँखें खोलीं। कमरे के सामान की रूपरेखाएँ अँधेरे में नज र आईं। बाहर बारिश हो रही थी। दूरी से गोली चलने की आवाज आ रही थी।

"नहीं।"

"क्यों नहीं?"

"मैंने तो शपथ खायी है।"

चाहता हूँ कि तुम जानो मैंने ऐसा क्यों कहा। तुम्हें जानता हूँ। मुझे याद है कि तुम्हारा हाथ पकड़ने देने तक कितने दिन लगे थे। तुम्हें बहुत चाहता हूँ। लेकिन यह नहीं चाहता कि इस वियोग और रक्त की रात में तुम मेरी बनो। यह तो बलिदान सा होता। मुझे बलिदान नहीं चाहिए, प्यार चाहिए। जून में, नर्म घास की सुगन्ध में, घास के शान्त मैदान में, छटकते तारों के नीचे मेरी बनो। अब ऐसे जून के लिए लड़ाई चल रही है। मेरा इन्तजार करो, मैं तुम्हारे पास वापस आऊँगा। मैं अक्षत हूँ, तब अक्षत कन्या मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी।

तुमने मुझे चूम लिया। ''तुम बहुत अच्छे हो।''

अब सो रही हो। मैंने शपथ खायी थी। हम दोनों की शपथ। उसकी शपथ भी खायी जो एक दिन पैदा होगा। उसे अपने बाप पर लज्जित नहीं होना चाहिए। ज रूरत पड़ने पर जान से मार सकता हूँ। ज रूरत पड़ने पर मर भी सकता हूँ। मुझे पूरा विश्चास है।

मुझे इस नफ रत भरी दुनिया से नफ रत है जो मुझे रोज विदा लेने पर मजबूर करती है इस भय में कि यह विदाई सदा के लिए होगी। लेकिन यह दुनिया अभी जि न्दा है, ठोकरें मारती है। इसलिए मैंने तुम्हारी स्कूली कापी के पन्ने पर यह चिट्ठी लिखी है। अगर मेरा वापस आना न हुआ तो यह चिट्ठी मेरी वसीयत होगी। मेरी माँ से कहो कि मुझे क्षमा करें, मेरे पिता से कहो कि मुझे अक्ल तो थी, लेकिन ईमान भी था।

और तुम जीती रहो। मेरा भी जीवन जिओ। अगर तुम्हारे किसी और से बेटा हो तो कम से कम उसको मेरा नाम दो। बहुत बहुत प्यार, मेरी जान। तुम्हारी नींद खराब नहीं करूँगा। खिड़की से छलाँग लगाकर घर से निकलता हूँ। ❑❑❑